thearyasamaj.org

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

19 व 26 अक्तूबर 2014

मूल्य : 10 रु.

वर्ष: 71 अंक : 28-29
सृष्टि संवत् 1960853115
19 व 26 अक्तूबर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

फिर दीवाली आ गई

-ले० श्री पंडित सत्यपाल जी पथिक अमृतसर

यह आ गई है आ गई लो फिर दीवाली आ गई।
दिल पर ऋषि की याद फिर बनकर घटा सी छा गई।
जिस दिन हुए संसार में दर्शन ऋषि के आखरी,
सुन लो कथा उस दिन की जो पत्थर को भी पिघला गई।
अजमेर की भूमि थी वह और वक्त था वह शाम का,
इक जोत जब बुझने लगी हर जिन्दगी घबरा गई।
पिए दूध में कांचो–ज़हर पूरा महीना हो गया,
सारा जिस्म ज़ख्मी हुआ नस–नस चुभन तड़पा गई।
अन्दर से जिसकी नाड़ियां उस कांच ने थी काट दी,
और ज़हर की तासीर भी अपना असर दिखला गई।
वेदों में जितने मन्त्र हैं उतने ही छाले देह पर,
प्यारे ऋषि की यह दशा भक्तों के दिल दहला गई।
सारे बदन में दर्द था दु:खता था चाहे रोम–रोम,
पर मुस्कराहट अन्त तक चेहरे का साथ निभा गई।
यह तो वही काया है जो रखती थी ताकत शेर की,
पर अब पड़ी मजबूर है गुल की तरह कुम्हला गई।
उसने कहा जब खोल दो दरवाजे और सब खिड़कियां,
यह बात ही अब कूच का बस वक्त है समझा गई।
और फिर कहा आकर मेरे पीछे खड़े होवो सभी,
खुद ली समाधि की दशा जो अपूर्व दृश्य बना गई।
मन्त्रों का उच्चारण किया और प्रेम से सन्ध्या करो,
फिर लेट गए आराम से जिह्वा यह बोल सुना गई।
अच्छी करी लीला प्रभु इच्छा तुम्हारी पूर्ण हो,
यह कह के आंखें मूंद लीं बिजली सी इक लहरा गई।
फिर श्वास खींचा जोर से और तन से बाहर कर दिया,
बस यह हवा जाती हुई परलोक में पहुंचा गई।
लो देखते ही देखते पिंजरे का पंछी उड़ गया,
हर दिल की धड़कन रूक गई हर इक नजर पथरा गई।
ऐसी लगी एक चोट सी कैसे कहूं कैसी लगी,
दिल की कली जल के रही हर आंख जल बरसा गई।
जग से दयानन्द नाम का इक रहनुमा जाता रहा,
यह खबर थी सुनकर जिसे सारी जमीं थराई गई।
रुक जा 'पथिक' लिखते हुए आंखों में आंसू आ गए।
सूखा गला दिल भर गया बिरती तेरी चकरा गई।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द का व्यक्ति निर्माण में योगदान

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली की रात्रि में ही महर्षि दयानन्द का देहान्त हुआ था। उनका आगमन सूर्योदय की भांति था। उनका इस संसार से जाना सूर्यास्त सा सिद्ध हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी भारत के लिए अमावस्या की तरह आई। चारों ओर अन्धकार था, परतन्त्रता में देश जकड़ा हुआ था। अशान्ति, अराजकता एवं आतंक का साम्राज्य था। शिक्षा लुप्त थी, पाखण्ड और अन्धविश्वास ने प्रत्येक मनुष्य को जकड़ रखा था। सूर्योदय पर प्रकाश की रश्मियां अन्धकार को बिंध देती हैं। अन्धकार धीमे-धीमे लुप्त हो जाता है और सारा वातावरण प्रकाशमय हो जाता है। महर्षि दयानन्द के भारत के मंच पर प्रकट होने पर भी ऐसा ही हुआ। उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई, पाखण्ड व अन्धविश्वास के विरूद्ध उन्होंने बिगुल बजाया। देश की भोली-भाली अशिक्षित जनता का उन्होंने पथ प्रदर्शन किया।

महर्षि दयानन्द एक अच्छे चिकित्सक थे। उन्होंने देश के रोग का निदान किया। उन्होंने पाया कि देश का जन साधारण अच्छा है, सरल प्रकृति का है भोला-भाला है , केवल मार्ग से भटक गया है। महर्षि दयानन्द ने देखा कि वह मनुष्यत्व खो बैठा है। मनुष्य के सभी आवश्यक गुण उसे छोड़ बैठे हैं। इन गुणों को देशवासियों में पुन: स्थापित करने पर ही देश का कल्याण हो सकता है। यह उनकी धारणा थी और इन गुणों को धारण करने के लिए महर्षि ने प्रयास किया और इस प्रयास में उन्होंने अपने प्राण भी उत्सर्ग कर दिए। महर्षि दयानन्द ने देखा कि भारतीय अपना स्वाभिमान खो बैठे हैं, अपनी संस्कृति की उपेक्षा करने लगे हैं और उनका आकर्षण पाश्चात्य संस्कृति की ओर हो रहा है। अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर लोग अपने स्वाभिमान को खो बैठे थे। महर्षि ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। वे संस्कृत भाषा के साहित्य से विशेष प्रभावित थे। संस्कृत साहित्य की बहुमूल्यता का उन्हें आभास था। महर्षि दयानन्द की आर्ष ग्रन्थों में आस्था थी। उनका विश्वास था कि वैदिक संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है, सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है और उस संस्कृति का आधार सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद है। महर्षि दयानन्द जी ने नारा दिया था कि प्राचीन संस्कृति की ओर चलो, वेदों से मार्गदर्शन लो। महर्षि दयानन्द की तीव्र इच्छा थी कि लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता से प्यार करें, अपने आर्ष साहित्य से प्यार करें, अपनी मातृभूमि के प्रति उन्हें लगाव हो और उसकी रक्षा के लिए वे अपना तन-मन और धन न्योछावर कर दें। स्वाभिमान पुन: जागृत करने का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है। इस बात को हम कैसे भूल सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने महात्मा गांधी के आविर्भाव से बहुत पहले ही स्वदेशी के अभियान की शुरूआत कर दी थी। महर्षि दयानन्द ने यह भी देखा कि नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। हमारे जीवन में असत्य का स्थान असत्य ने ले लिया है, प्रेम का स्थान घृणा ने, मित्रता के स्थान पर द्वेष, कलह ने आधिपत्य जमा लिया है। लोग विश्वास का उत्तर विश्वासघात से देने लगे हैं। महर्षि दयानन्द जी को यह देखकर अत्यन्त दुख हुआ कि भारत का निवासी कृतघ्न भी हो गया है, अपने भगवान को भुलाकर वह नास्तिक बन गया है। निराकारी सर्वव्यापक परमात्मा के स्थान पर वह पत्थरों की पूजा करने में संलग्न है। अपने देश में अवतारों की होड़ सी लग गई थी। रोज कोई नया ठेकेदार जन्म लेता था और अपनी दुकान खोलकर बैठ जाता था। महन्त और मठाधीश सार्वजनिक जन जीवन में इस तरह छा गए थे कि सामान्य जन का मनन और चिन्तन कुण्ठित हो गया था। मनुष्य की इतनी दुर्दशा पहले कभी नहीं हुई थी। नारी शिक्षा का समूल नाश हो गया था। अनेक प्रकार की बुराईयों से हमारा देश इस तरह जकड़ा हुआ था कि महर्षि दयानन्द को यह सब देखकर अत्यन्त वेदना हुई। महर्षि ने नैतिक मूल्यों के पुर्नस्थापन का पूर्ण प्रयास किया। भोली भाली गरीब अनपढ जनता को नीति के साधारण सिद्धान्त सिखाए। सत्य बोलना सिखाया, सत्याचरण सिखाया, सदाचार सिखाया और ऐसा भी समय आया जबकि महर्षि दयानन्द का शिष्य झूठ नहीं बोल सकता है, गलत काम नहीं कर सकता है, उस पर भरोसा किया जा सकता है। ऐसी धारणा बन गई थी। यहाँ तक कि अंग्रेजों की अदालतों में भी उसकी गवाही नि:संकोच मानी जाती थी।

महर्षि को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक नया विचार मनुष्य के मानस में प्रविष्ट कर गया है, यह विकार था असमानता के दृष्टिकोण का। ईश्वर की सृष्टि में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं पाया जाता है। ईश्वर की दृष्टि में सब मानव एक से हैं। सबके लिए एक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जल, वायु, सूर्य का प्रकाश सभी के लिए है। कोई पक्षपात नहीं परन्तु न जाने मनुष्य ने कहां से भेदभाव सीख लिया। पुरूष अपने आपको नारी की अपेक्षा श्रेष्ठ समझने लगा। नारी के जीवन पर प्रतिबन्ध लगाए जाने लगे। जातियों को कर्म ने बनाया था परन्तु ये जातियां जन्मजात बन गई थी। इस प्रकार ऊँचनीच की भावना ने जन्म लिया। समाज का एक वर्ग अपने आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझता था। नारी के लिए शिक्षा के दरवाजे हमेशा बन्द कर दिए गए। शूद्रों के ऊपर अत्याचार किए जाते थे।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द का निर्वाण और दीपावली का पर्व

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 1883 की पवित्र दीपावली के दिन निर्वाण हुआ था। स्वामी जी ने अजमेर नगरी में अपने नश्वर शरीर को त्यागा। स्वामी जी को जोधपुर में विष दिया गया था। यहां स्वामी जी महाराज के सत्याग्रही रूप का परिचय मिलता है। स्वामी जी शाहपुर से चलकर जोधपुर पहुंचे थे। जब शाहपुर से जाने वाले थे तो स्वयं शाहपुर नरेश श्रीचरणों में उपस्थित हुए और अभिवादन करके इस बात का संकेत किया था कि आप जोधपुर तो पधारते हैं परन्तु वहां वेश्या आदि का खण्डन न करना। इस कथन की पृष्ठभूमि यह है कि जोधपुर के महाराजा एक वेश्या के जाल में फंसे हुए थे और यह स्पष्ट ही था कि महर्षि दयानन्द उनके दुराचार के विरूद्ध खुले शब्दों में उपदेश दिए बिना नहीं रहेंगे। इसीलिए महर्षि दयानन्द के हितचिंतक अनिष्ट की शंका करते थे। इसीलिए कुछ भक्तों ने भी भावी विपत्ति के भय से महाराज से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि वहां न जाए। स्वामी जी महाराज ने शाहपुर नरेश को उत्तर दिया था कि राजन्! मैं बड़े वृक्ष को नुहरने से नहीं काटता, उसके लिए तो बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार महर्षि ने अपने भक्तों के उत्तर में कहा था, यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर सत्योपदेश अवश्य करूंगा।

ऊपर की घटनाएं एक प्रकार से भविष्य की ओर स्पष्ट रूप में ही थी। स्वामी जी ने अपने भाषणों में राजाओं के आचरण की शुद्धता पर काफी जोर दिया था। परिणामस्वरूप महाराजा की नन्हीं जान वेश्या जो स्वामी जी की शत्रु बन गई थी। जोधपुर नरेश का एक दरबारी फैजुल्ला खाँ स्वामी जी का शत्रु बन गया था। इसका कारण था कि स्वामी जी द्वारा इस्लाम की समीक्षा। इन सभी ने स्वामी जी के विरोध में षड्यन्त्र बनाया। स्वामी जी के रसोईए से मिलकर उन्हें घातक विष दिया गया। उसी के परिणामस्वरूप दीपावली के दिन अजमेर नगरी में स्वामी जी महाराज का शरीरान्त हुआ। सन् 1884 ई. में स्वामी जी का जन्म हुआ था, किन्तु 1838 ई. में टंकारा ग्राम के एक शिवालय में शिवरात्रि को जो ज्योति प्रज्वलित हुई थी, वह चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अन्तत: सन् 1883 की दीवाली को अन्य दीपों को प्रज्जवलित कर स्वयं लुप्त हो गई। सन् 1863 में जब महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा पूर्ण करके गुरू से विदा मांगी तो स्वामी विरजानन्द जी ने कहा कि देश का उपकार करो, सत्यशास्त्रों का उद्धार करो, मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटा दो और वैदिक धर्म का प्रचार करो। गुरू ने शिष्य के कन्धों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी रख दी थी। गुरू को पूर्ण विश्वास था कि इस जिम्मेदारी को उठाने की उनके शिष्य दयानन्द में क्षमता और सामर्थ्य है। शिष्य ने नतमस्तक होकर गुरू की आज्ञा को स्वीकार किया और संसार रूपी अथाह समुद्र में अपनी जीवन रूपी नौका को डाल दिया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण सुधार आंदोलनों का सूत्रपात किया। मूर्तिपूजा के स्थान पर निराकार सर्वशक्तिमान ईश्वर का ध्यान, भक्ति और उपासना की पद्धति प्रचलित की। विभिन्न अवतारों के और देवी देवताओं के स्थान पर ऐकेश्वरवाद को प्रस्थापित किया। नाना प्रकार के धर्म ग्रन्थों के स्थान पर वेद और वेद सम्मत ऋषियों-मुनियों के ग्रन्थों की महत्ता और वेद प्रतिपादित वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। महर्षि दयानन्द एक आदर्श समाज सुधारक थे। उनकी दृष्टि में सबसे आवश्यक लक्ष्य व्यक्ति का निर्माण था। उन्होंने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की थी और उसके छठे नियम में संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया है। आर्य समाज के दस नियमों को दृष्टि में रखकर यह विदित होता है कि महर्षि का उद्देश्य यह था कि ईश्वर का स्वरूप सबकी समझ में आए। उन्होंने ईश्वर को पहले नियम में सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल बताया है, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म बताया है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में व्यक्तियों की उन्नति के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व स्वाधीनता और स्वतन्त्रता है। वे यह जानते थे कि पराधीनता में न सुख है और न शान्ति है। स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति हर प्रकार की पराधीनता और दासता से मुक्त रहे। जब महर्षि ने कार्य आरम्भ किया था तब सारा भारत राजनीतिक दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। महर्षि को यह देखकर बड़ी वेदना होती थी और उन्होंने राजनीतिक दासता के निराकरण और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रबल रूप से प्रचार किया। महर्षि ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग सबसे पहले सत्यार्थ प्रकाश में किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि स्वराज्य प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है। गुजरात की धरती पर टंकारा नामक ग्राम में उन्नीसवीं सदी में जिस दीपक का प्रादुर्भाव हुआ था उस दीपक ने अपने प्रकाश से संसार के गहनतम अन्धकार को दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस महर्षि दयानन्द रूपी दीपक से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। टंकारा के एक शिवालय में शिवरात्रि को प्रज्जवलित वह दीपक स्वयं जला, अनेक बुझे हुए दीपकों को प्रज्जवलित किया और उसी शती के नवें चरण में पहुंचते-पहुंचते उस दीपक ने दीवाली के दिन ही अजमेर नगरी में शत-शत दीपकों को अपना आलोक दान कर, अपनी प्रभा से प्रभावित कर, अपने तेजपुंज से तेजस्विता प्रसारित कर, अपने अनुपम प्रकाश से प्रकाशित कर महाभियान का मार्ग अपनाया। महाप्रयाण का प्रवास प्रारम्भ किया। महर्षि दयानन्द ने वेद का सन्देश देने के लिए अपने जीवन को अर्पित कर दिया। संसार के उपकार के लिए जिए और संसार के उपकार के लिए ही वह मर कर अमर हो गए तथा मरती हुई मानवता को अमरत्व का संदेश दे गए। वह क्रान्ति के पुञ्ज थे। साम्प्रदायिकता के दुर्भेद्य किलों को वैचारिक क्रान्ति से उन्होंने ध्वस्त किया। अज्ञानता एवं रूढ़िवाद के भंवर से मानव जाति का उन्होंने उद्धार किया। आँखे होते हुए भी ज्ञान दृष्टि के अभाव में मानव जाति भटक रही थी, महर्षि ने उसे ज्ञान दृष्टि रूपी दिव्य चक्षु प्रदान किए। दीपावली का पर्व प्रत्येक वर्ष हमें ऋषि निर्वाण की याद दिलाता है। ऋषि दयानन्द का इस संसार से जाना भी हमें एक संदेश दे गया। नास्तिक गुरूदत्त के हृदय में आस्तिकता की ज्योति प्रज्जवलित कर गया। ऐसी पवित्र, पुण्य आत्मा को नमन करते हुए, उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए हम भी उस महान् आत्मा के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लें, उनके जनहित के कार्यों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं।

thearyasamaj.org

दीवाली दयानन्द की

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

एक बार महर्षि अरविन्द से किसी ने पूछा-आप दयानन्द जी को स्वामी दयानन्द या महर्षि दयानन्द क्यों नहीं कहते? सिर्फ दयानन्द ही क्यों कहते हैं? महर्षि अरविन्द ने कहा- महर्षि तो भारत भूमि पर अनेक हुए हैं और स्वामी भी जहां कहीं दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु भारत की भूमि पर दयानन्द जैसा आज तक न कोई हुआ है और न होगा। इसलिए मैं तो उन्हें दयानन्द ही कहूंगा। वस्तुत: दीन- दुखियों पर दया करके ही आनन्दित रहने वाले दयानन्द अपने आप में एक ही थे। दीवाली की रात्रि है, ऋषि दयानन्द का पूर्ण शरीर, रोम-रोम छालों से भरा पड़ा है। कोई साधारण व्यक्ति होता तो कराहते-कराहते ही कमरा सिर पर उठा लेता परन्तु वाह रे दयानन्द! उस पीड़ा असह्य पीड़ा में भी मुख पर अनिवर्चनीय आभा। पीड़ा की घड़ियों में भी सबको आनन्द बांटने वाला अनोखा ही व्यक्तित्व था। स्वामी जी को अपने दर्द की चिन्ता नहीं थी। चिन्ता थी तो यह कि जाते-जाते भी अंधेरे दिलों में प्रकाश की किरणें बिखेर जाएं। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी नास्तिक थे। प्रभु विश्वास के लिए भी तो प्रभु कृपा की आवश्यकता है। न यमैवेष वृणुते तेन लभ्य: वह प्रभु कृपा की घड़ी पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के लिए आ पहुंची थी। स्वामी जी ने भक्तों से कहा- सब खिड़कियां दरवाजे खोल दो, सब लोग मेरे पीछे आ जाओ। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी को अपने सामने की दिशा में खड़ा रहने के लिए कहा। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे। ऋषि के साथ तर्क वितर्क करते थे। परन्तु उन्हें प्रभु की सत्ता पर विश्वास नहीं था। वे महर्षि दयानन्द जी से तर्क वितर्क करते हुए कहते थे कि आपके तर्क अकाट्य हैं परन्तु क्या करूं ईश्वर की सत्ता पर विश्वास नहीं होता। महर्षि दयानन्द कहते वह समय भी आएगा, जब विश्वास जमेगा। ऋषि ने सोचा इस अंधेरे दीए को प्रकाशित करना है। ऋषि दयानन्द ने प्रभुभक्ति के मन्त्र पढ़े। प्राणायाम द्वारा अपने श्वास बाहर निकाले और अपने प्यारे प्रभु की गोद में जा पहुंचे। ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, गुरूदत्त देख रहे थे कि वह कौन सी अद्‌भुत अदृश्य शक्ति है, जिसके सहारे से इस पीड़ा में भी ऋषि के चेहरे पर दिव्य तेज है, चमक है, मुस्कान है। मानो प्यारे प्रीतम से भेंट करने जा रहे हो। जरूर कोई आध्यात्मिक शक्ति है। गुरूदत्त के अन्दर का अन्धकार छंट चुका था। प्रभु विश्वास का प्रकाश मन में व्याप्त हो गया था। यह थी ऋषि दयानन्द की दीवाली।

आज ऋषि दयानन्द का निर्वाण हुए 131 वर्ष पूरे हो रहे हैं। दीपावली की रात को हम फिर से दीपक जलाएंगे। दीपावली की रात को जो प्रकाश होता है वह बहुत थोड़े समय के लिए होता है और वे दीए बुझ जाते हैं परन्तु महर्षि दयानन्द जी अपने जीवन रूपी दीपक से जो प्रकाश हमें दिया है, जो ज्ञान का दीपक उन्होंने अपने जीवन में जलाया था वह कभी बुझने वाला नहीं है। उस दीपक से प्रेरणा लेकर कितने ही लोगों ने अपने जीवन को प्रज्वलित किया। महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा पाकर कितने ही नौजवानों ने देश की आजादी के लिए आपने आपको बलिदान कर दिया। आज फिर आवश्यकता है कि महर्षि दयानन्द जी ने वेदज्ञान रूपी दीपक जलाया था उस दीपक के प्रकाश को फैलाने की। आज समाज में अनेक प्रकार की बुराईयां तथा कुरीतियां फैल रही हैं। इन बुराईयों को दूर करने के लिए हम अपने अन्दर ज्ञान का दीपक जलाएं। बाहर के दीपक का प्रकाश कुछ समय के लिए होगा परन्तु अगर अपने अन्दर के दीपक को जला लिया तो वह दीपक पता नहीं कितनों को नवजीवन प्रदान करेगा। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस प्रतिवर्ष हमें याद दिलाता है कि हम कहां तक उनके सिद्धान्तों को अपने जीवन के अन्दर अपना रहे हैं। इतने वर्षों में हमने क्या खोया है और क्या पाया है।

दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाते हुए यह संकल्प लें कि हम भी अपने जीवन के अन्दर ज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित करेंगे और उस ज्ञान की ज्योति से राष्ट्र में जितनी कुरीतियां, बुराईयां, अन्धविश्वास तथा पाखण्ड़ फैल रहे हैं उन्हें दूर करेंगे। इस प्रकार का संकल्प लेने पर ही हम महर्षि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि भेंट कर सकते हैं। महर्षि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं, आदर्शों तथा गुणों से भरपूर है। उनके जीवन का प्रकाश सबका मार्गदर्शन करने वाला है। आईए हम भी पं. गुरूदत्त की तरह सच्चे शिष्य बनकर महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रकाश प्राप्त करें।

पृष्ठ 1 का शेष-महर्षि दयानन्द का.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गुरू विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन कुरीतियों, बुराईयों, अत्याचारों, अन्धविश्वासों तथा पाखण्ड़ों के खिलाफ आवाज उठाई। महर्षि दयानन्द ने मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द जी चाहते थे कि मनुष्य वेद के अनुसार अपना आचरण करे। इन्हीं कुरीतियों और बुराईयों के खिलाफ लड़ते हुए उन्होंने अपने जीवन की परवाह नहीं की और दीपावली के दिन इस संसार से प्रयाण किया।

महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि महर्षि दयानन्द ने जिन कुरीतियों और बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाई थी, अपने गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित किया था उन्हीं कुरीतियों, पाखण्ड़ों और अन्धविश्वासों के खिलाफ लड़ने का संकल्प लेंगे। यही हमारी महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द की महत्ता

ले०—श्री देवेन्द्र शर्मा उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की पुण्यभूमि ने अनेकों ऐसे महापुरूष प्रदान किए हैं कि जिनके निरन्तर प्रयासों के फलस्वरूप भारत में राष्ट्रीयता की भावनाएं जागृत हो उठी और देश स्वतन्त्रता के पुनीत पथ पर आगे बढ़ा। ये सभी महापुरूष पुनर्जागरण के अग्रदूत थे, किन्तु राष्ट्रीयता का अग्रदूत होने का सौभाग्य केवल युगपुरूष महर्षि दयानन्द को प्राप्त हो चुका। कारण यह कि राष्ट्रीयता का जो चित्रण महर्षि दयानन्द में उभरा वह किसी महापुरूष में दृष्टिगोचर नहीं होता। वे ही एक ऐसे महापुरूष थे जिसने सही अर्थों में राष्ट्रीयता की सजीव भावनाएं जागृत की थीं। अत: वही राष्ट्रीयता का अग्रदूत कहलाने का अधिकारी बन सके। एक क्रान्तिकारी समाज सुधारक एवं धर्म संशोधक होते हुए भी वे मूलत: राष्ट्रवादी थे। डा. गोविंद शर्मा के शब्दों में कि राष्ट्रीय चेतना, स्वतन्त्रता और ममता की भावना को जगाने का स्तुत्य प्रयत्न स्वामी दयानन्द द्वारा ही सम्भव हुआ। एनी बीसेंट ने उन्हें भारतवासियों के लिए स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक और स्वाधीनता संग्राम के गरम दल के नेता श्री लोकमान्यतिलक उन्हें स्वाधीनता का प्रथम संदेशवाहक कहते हैं। वस्तुत: महर्षि दयानन्द सरस्वती जी राष्ट्रीयता के अग्रदूत तथा स्वतन्त्रता स्वदेशी आदि के मन्त्रदाता ऋषि थे। स्वराज्य, स्वतन्त्रता, स्वदेशी और स्वदेशाभिमान आदि की उत्कृष्ट भावनाएं भारतवर्ष में सर्वप्रथम उन्नीसवीं शताब्दी में उन्हीं के हृदय में उद्भूत हुई और उन्हीं ने ही सर्वप्रथम उनकी यथार्थ अभिव्यक्ति भी की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बहुत पहले ही महर्षि ने सच्चे स्वराज्य का स्वरूप प्रस्तुत कर दिया था। ऋषि दयानन्द के सभी उत्कृष्ट ग्रन्थ राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हैं। सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य का पावन संदेश पढ़कर विश्व के प्रत्येक मानव के हृदय में स्वाधीनता की सहज अनुभूति हो सकती है।

वीर सावरकर जी ने कहा था कि यदि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द न लिखते तो आज स्वराज्य की पुकार न सुनाई देती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशस्त मार्ग पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ़ने में समर्थ हो सका एवं संस्कृति, स्वदेश और स्व इतिहास आदि के प्रति गौरव की जिस भावना का बीज वपन महर्षि ने किया था उसके फलस्वरूप देश में राष्ट्रीयता की भावनाएं जागृत हो सकी। इसलिए महर्षि दयानन्द नव राष्ट्र के मन्त्रदाता गुरू थे।

19वीं शती के पराधीन भारत में अन्धविश्वासों, पाखण्डों, तथा गुरूडमवाद ने लोगों को मानसिक रूप से दास बनाकर पशुवत् बना रखा था। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वेद विरूद्ध नाना मत-मतान्तर, बाल विवाह, अज्ञानता, आचारहीनता आदि दोषों को महर्षि दयानन्द ने पराधीनता का कारण बताया है। महर्षि दयानन्द ने अनुभव किया कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का सामाजिक सुधार और वैदिक संस्कृति के पुनरूद्धार में कार्य कारण सम्बन्ध है। महर्षि दयानन्द ने इन सभी दोषों को दूर करने के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। दयानन्द के युगसंदेश में सोए हुए भारतवासियों को जगाया। सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार से लोग मानसिक दासता से मुक्त होने लगे। महर्षि दयानन्द के जीवन में धार्मिक उपदेशक, समाज सुधारक और राष्ट्रोद्धारक आदि सभी गुणों की विशेषता दिखाई देती है। स्वामी दयानन्द पूर्णत: धार्मिक महामानव थे। पूर्ण वैराग्य के साथ सामाजिक कल्याण के लिए वे समाज में रहे। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ उन्होंने समाज के लिए अनुपम तप-त्याग किया। संसार का उपकार करने के दृढ़ संकल्प से उन्होंने आर्य समाज की सथापना की और राष्ट्र को एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने लोगों को पाखण्डों, अन्धविश्वासों, कुरीतियों, के जाल से मुक्त कराया। उन्होंने मूर्ति पूजा का खण्ड़न करते हुए लोगों को बताया कि ईश्वर एक है जो सर्वव्यापक है, न्यायकारी, इस सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है और उसका मुख्य नाम ओ३म् है। महर्षि दयानन्द अपने देश की शिक्षा पद्धति परिवर्तन करना चाहते थे। उनका विचार था कि विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त में होना चाहिए और लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोष एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि शिक्षा सभी को समान रूप से मिलनी चाहिए, चाहे वह किसी गरीब का बालक हो या किसी राजा का। महर्षि दयानन्द के लिए मानव जीवन का कोई पक्ष परकीय नहीं था। वे अपने देशवासियों का पूर्ण उद्धार करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द जी की भावना थी कि अपने देश के लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभूमि से प्यार करें। महर्षि दयानन्द ने वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, यह बताकर सहस्रों वर्षों से अन्धकार में भटकते मानव के अन्त:करण के प्रसुप्त विवेक को जागृत किया। महर्षि दयानन्द को भारतीय संस्कृति का पुनर्रूद्धारक कहा जा सकता है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

नारी जाति पर महर्षि दयानन्द के उपकार

ले०—श्री अशोक पुरूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

महर्षि दयानन्द के आने से पहले नारी जाति की जो दशा थी, इससे इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं। नारी को कहीं भी और किसी भी क्षेत्र में सम्मान नहीं दिया जाता था। देश विदेश में इसकी स्थिति दयनीय थी, सभी धर्मों के लोगों ने नारी की अवहेलना की थी। ईसाई मत, मुस्लिम मत, पौराणिक मत आदि सभी मतों में भी नारी को कोई विशेष स्थान नहीं दिया गया था। नारी को नरक का द्वार कहा जाता था। नारी को ताड़न का अधिकारी कहा जाता था। शंकराचार्य जैसे विद्वानों ने भी नारी को हीन बताया था। इसलिए महर्षि के आने से पहले नारी पर्दे में बन्द थी। महर्षि के आने से पहले अनमेल विवाह, बाल विवाह, आदि का प्रचलन जोरों पर था। आठ दस साल के बच्चों का विवाह कर दिया जाता था। आठ वर्ष की बच्ची का लोभ लालच में आकर साठ वर्ष के बूढ़े के साथ विवाह कराया जाता था और जब तक वह युवा होती थी बूढ़ा स्वर्ग सिधार जाता था और फिर उस भरी जवानी में विधवा हुई कन्या का पुनर्विवाह नहीं हो सकता था। उसको जीवन भर तिल-तिल कर मरना पड़ता था। भारत की बेटियां विधर्मियों के चंगुल में फंसकर अपना जीवन और भी नष्ट कर लेती थी। वेद तो पढ़ने का उन्हें क्या अधिकार मिलता। वह अक्षर ज्ञान भी नहीं कर सकती थी। किसी भी स्कूल और कॉलेज में कोई कन्या नहीं पढ़ाई जाती थी। नारी केवल घर की चारदीवारी में बन्द थी और पर्दे से ढ़की हुई थी। पति के मर जाने पर कई स्थानों पर स्त्री को मजबूरन सती कर दिया जाता था। जब वह चिता से दूर भागती थी तो उसे बांसों से धकेलकर लोग चिता में जला देते थे।

एक नहीं अनेकों अनगिनत अत्याचार स्त्री जाति पर किए जा रहे थे। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा हुई दया और आनन्द के भण्डार महर्षि दयानन्द जन्म धारण करके इस धरती पर आए और जब गुरू विरजानन्द जी से पूरी शिक्षा प्राप्त करके नारी के ऊपर होने वाले अत्याचारों को और नारी के चीत्कारों को वह सह न सके, उन्होंने नारी जाति के उत्थान के लिए अपनी आवाज बुलन्द की। उन्होंने कहा कि अगर देश को आजाद कराना है, अगर भारत को उन्नत करना है, देश को खुशहाल बनाना है तो नारी जाति का अर्थात् मातृ शक्ति का उत्थान करो। माता निर्माता भवति मां निर्माण करने वाली है और मां ही अयोग्य होगी तो सन्तान का निर्माण कैसे करेगी। इसलिए समाज के निर्माण का आधार मां है, मातृ शक्ति है। यह पढ़ी लिखी, विदुषी, वेदों को जानने वाली और सब प्रकार की विद्याओं में निपुण होनी चाहिए। जैसे प्राचीन काल की देवियां बहुत विदुषी थी। ऋषि ने अनेकों उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि भारत की देवियां सारे संसार में अपना सबसे ऊंचा स्थान रखती थी। महर्षि मनु के शब्दों में यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता के अनुसार नारी की पूजा की जाती थी, उन्हें सम्मान दिया जाता था। स्थान-स्थान पर जाकर महर्षि ने अपनी आवाज को बुलन्द किया और धीरे-धीरे लोगों ने उनकी आवाज को सुना और इस ओर ध्यान दिया। धीरे-धीरे लोगों ने लड़कियों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया। बाल विवाह बन्द कर दिए और विधवा विवाह आरम्भ किए। लड़कियों को पढ़ाया जाने लगा। कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया परन्तु महर्षि दयानन्द ने उनकी परवाह नहीं की। आज नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ चुकी है, अब वह घर की चारदीवारी में बन्द नहीं है। वह पुरूष के साथ हर क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। इसका सारा श्रेय अगर किसी को जाता है तो वह महर्षि दयानन्द को जाता है। अगर महर्षि दयानन्द न आते तो नारी जाति का इतना उत्थान नहीं हो पाता जितना हुआ है। नारी जाति महर्षि दयानन्द की ऋणी है। नारी जाति के ऊपर महर्षि दयानन्द के इतने अहसान हैं कि उन्हें गिनाया नहीं जा सकता। महर्षि दयानन्द ने नारी को निर्मात्री बना दिया। नारी को उसका कर्त्तव्य बताकर उसे राष्ट्र का निर्माण करने की शक्ति प्रदान की। आज वह वेद भी पढ़ रही है। सभी प्रकार की विद्याओं को भी पा रही है। पुरानी कुरीतियों और बन्धनों को तोड़कर आज वह आगे बढ़ गई है। आज राष्ट्र के उच्च से उच्च पदों पर नारी विराजमान है। नारी में वह शक्ति है जो अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए समाज का निर्माण करती है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में शतपथ ब्राह्मण का वाक्य उद्धृत करते हुए कहा कि मातृमान्, पितृमान् आचार्यवान् पुरूषो वेद अर्थात् बच्चे का पहला गुरू उसकी माँ है। अगर नारी शिक्षित है तभी वह अपनी सन्तान की गुरू बन सकती है। महर्षि दयानन्द ने इसी बात को ध्यान में रखकर नारी शिक्षा का सूत्रपात किया।

आज दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हम सभी उनके द्वारा किए गए उपकारों का स्मरण करें। महर्षि दयानन्द ने जिन कार्यों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था हम भी उन कार्यों को करने का संकल्प लें। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके जो मार्ग हमें दिखाया है हम उस मार्ग पर चलकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। महर्षि दयानन्द को हम तभी सच्ची श्रद्धाजंलि दे सकते हैं जब हम उनके द्वारा किए कार्यों को आगे बढ़ाएंगे और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग देंगे। यही हमारी ऋषि चरणों में सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

thearyasamaj.org

दीपावली और दयानन्द

ले०—श्री स्वतन्त्र कुमार उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

मानव के समुचित विकास, हित, मस्तिष्क के साथ-साथ, हृदय विकास की भी आवश्यकता पड़ती है। इसलिए हमारे ये त्योहार और पर्व, हृदय विकास में विशेष सहायक हैं। मानव में ये सरलता और परोपकार की भावनाएं भरते हैं। त्योहार मानवीयता का प्राण हैं। अत: प्रत्येक ऋतु अपने साथ कोई न कोई त्योहार अवश्य लाती है। जिससे जीवन की नीरसता व जड़ता दूर होती है, तथा अपनी संस्कृति और महापुरूषों के प्रति हमारी आस्था बढ़ती है और जीवन में उमंगों की सरिता प्रवाहित होती है। ये मानव में मनोरंजन के साथ प्रेरणा और आशा के साथ विश्वास भी जगाते हैं।

निरूक्तानुसार पर्व हमें मानवीय गुणों से पूर्ण करते हैं। हमारी संकुचितताओं को समाप्त कर हमें प्रसन्न करते हैं। गन्ने की पोरियों के सदृश जीवन में सरसता और मिठास के साथ सुदृढ़ता प्रदान करते हैं, तथा उन्नत पर्वत शिखरों सदृश गौरव व ज्ञान से हमारा मस्तिष्क ऊंचा करते हैं। पर्व हमारी संस्कृति की उज्जवलता के प्रतीक हैं। ये सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और धार्मिक चार प्रकार के होते हैं। अत: दीपावली हमारा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पर्व है।

इस ऋतु में देश धन-धान्य से पूर्ण होता है। दो फसलें काट ली जाती हैं। फलत: जनमानस में प्रसन्नता व्याप्त होती है और समय की डोली जब त्योहारों के साये से गुजरती है तो ये मानव जीवन को आनन्द सौरभ से आप्लावित कर उत्साह और प्रेरणा से भर देते हैं। एक विचारानुसार इस पर्व को राम द्वारा लंका विजय के बाद अयोध्या वापिस आने पर नगरवासियों द्वारा दीपमाला जगाकर उनका स्वागत करने से भी माना जाता है। परन्तु आर्य समाज इसे ऋषि बलिदान दिवस के रूप में मनाता है। जिसका अर्थ है- असत्य पर सत्य की, अज्ञान पर ज्ञान की, परतन्त्रता पर स्वतन्त्रता की, और विदेशीपन पर स्वदेशी की भावना की विजय। चूंकि युगों पूर्व जो काम राम ने रावण को मार कर सम्पन्न किया था, 19 वीं शताब्दी में वैसा ही काम महर्षि दयानन्द ने अज्ञान और परतन्त्रता के रावण को मार कर किया। राम के पास सत्य का हथियार था और देव दयानन्द ने भी वैचारिक क्रान्ति का आन्दोलन सत्य के बल पर ही चलाया था। जिस कारण उन्हें बार-बार जहर पीना पड़ा और आखिर सत्य पर मिटने वाले उस महापुरूष ने अपने को सत्यवेदी पर न्योछावर करके सत्यनिष्ठों में अपना नाम अमर कर दिया।

महर्षि में जितने गुण थे उनका आधार सत्यनिष्ठा थी। इसलिए उन्होंने आर्य समाज के चौथे नियम में घोषणा की कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। महाभारत में आया है सत्यं स्वर्गस्य सोपानम् अर्थात् स्वर्ग की सीढ़ी है। अत: ऋषिवर ने सत्य की परिभाषा देते हुए कहा - जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना, मैंने सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है और हम आगे पाते हैं कि उनके प्रत्येक कार्य से यह सिद्ध होता गया कि- सत्यमेव जयते, नानृतम सत्येन पन्था विततो देवयान:।। अर्थात् सत्य की जय होती है, असत्य की नहीं, और दिव्य जीवन का मार्ग सत्य से बना है। परन्तु यह संसार बड़ा विचित्र है। कुछ लोगों ने दयानन्द को पहचाना और कुछ लोगों ने नहीं। जिन्होंने नहीं पहचाना , उन्होंने उस पर ईंट पत्थरों की बौछारें की, स्थान-स्थान पर विरोध किया। अनेकों बार जहर दिया। परन्तु जिन्होंने उसे पहचाना वे अपने आपको उस दिव्य पुरूष का ऋणी मानते हैं।

उद्देश्य जितना पवित्र होगा बलिदान उतना ही महान् होगा। इस तरह अहर्निष संसार का हित चाहने वाला यह निर्लेप महात्मा , दीवाली की शाम को जबकि सूर्य डूब रहा था और अमावस की अंधियारी रात्रि को प्रकाशित करने असंख्य तारे और जमीन पर कोटि-कोटि दीपक जगमगा रहे थे तो वेद ज्ञान का यह सूर्य जो पांच हजार साल बाद भारत क्षितीज पर उदय हुआ था, अपनी सुषमा बिखेर कर धीरे से सन् 1883 की दीपावली को इस संसार से अस्त हो गया। आज दीपावली का पर्व मनाने का तभी लाभ है जब हम महर्षि के बताए मार्ग पर चलकर मानवता का भला कर जाएं।

पृष्ठ 4 का शेष-महर्षि दयानन्द की.....

उन्होंने वैदिककालीन संस्कृति, इतिहास एवं परम्परा के आधार पर एक ऐसी जीवन दृष्टि प्रस्तुत की जो युगों-युगों तक न केवल भारतीय जन समाज अपितु समग्र विश्व को आलोकित एवं मार्गदर्शित करती रहेगी। उनके धर्म में निहित समाज रचना की परिकल्पना एवं मानव मूल्यों की अवधारणा देश काल अबाधित है। वे मुक्तात्मा थे। अनन्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त निराकार परमात्मा पर उनका पूर्ण विश्वास था। दीपावली का यह महान् पर्व जिसे हम प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाते हैं। महर्षि दयानन्द जी सत्य धर्म के प्रतिपादक थे। वैदिक ज्ञान की ऊर्जा से प्रदीप्त वह अखण्ड ज्योति का पुञ्ज ब्रह्मचारी भारत तथा विश्व में व्याप्त रूढ़ियों, अज्ञानताओं, अन्धविश्वासों, तथा पाखण्डों के विरूद्ध जयघोष करते हुए अग्र पथ प्रदर्शक के रूप में आए। दलितों, निर्धनों, तथा अशिक्षा से आक्रान्त महिलाओं के वह पथ प्रदर्शक बनें। जिस प्रकार दीपावली के दिन सहस्रों दीपकों की ज्योति से अन्धकार दूर हो जाता है उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर, उनके गुणों को अपने जीवन के अन्दर धारण करके मानव जाति का पथ प्रदर्शक बनें।

thearyasamaj.org

दीपावली का पावन सन्देश-

अपावृणोः ज्योतिरार्याय
आर्यों के लिए ज्योति के द्वार सर्वदा खुले हैं

ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

दीपावली का पर्व हमारे देश के लिए सुख, शान्ति, समृद्धि, ऐश्वर्य और सम्पन्नता का प्रतीक पर्व है यह मुख्यतः वैश्य वर्ण का प्रेरक पर्व है। किसी देश की आर्थिक सुदृढ़ता ही उसकी स्थायित्व और जनता को सुख-सुविधा प्रदान करने में समर्थ हो सकती है। विपन्नता एक प्रकार का पाप है। जब राष्ट्र के व्यापारी अपने पुरूषार्थ से उद्योग धन्धों का विस्तार करेंगे तथा कृषक वर्ग प्रचुर मात्रा में खाद्यान उत्पन्न करेगा तभी देश खुशहाल हो सकेगा।

दीपक या ज्योति ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान आत्मा को प्रकाशित करके हमें अमृत या मोक्ष को प्रदान करता है। जबकि अज्ञान या अन्धकार ही मृत्यु है। इस अज्ञान या मृत्यु का निवारण हम अमृतरूपी ज्ञान ज्योति से ही कर सकते हैं। इसीलिए वेद में इसका संकेत करते हुए लिखा है कि-

ज्योतिषा बाधते तमः

इस पर्व पर हमें मृत्यु या अन्धकार से अभय होने का सन्देश भी प्राप्त होता है। अमावस्या की काली रात्रि में जब सारा देश डूबा हुआ निश्चिन्त सो रहा था, उस समय भारतवर्ष में दयानन्द नामक महान् सुधारक और तत्त्वज्ञानी महर्षि मृत्यु से संघर्ष कर रहा था। किन्तु यह संघर्ष अत्यन्त निर्भयतापूर्वक सहज रूप में हो रहा था। शरीर पर भयानक व्रणजन्य कष्ट होने पर भी मुख मुद्रा अत्यन्त तेजस्वी और हृदय में असीम शान्ति तथा आभा व्याप्त थी। अवश्यम्भावी मृत्यु से क्या डरना? यह साधारण मृत्यु अज्ञान का प्रतिरूप है। ज्ञान ही शाश्वत अमृत है। महर्षि दयानन्द ने ज्ञान रूपी अमृत का अथाह सागर ही प्राप्त कर लिया था। इसलिए वे निर्भय, निश्चिन्त और मोक्ष की ओर अग्रसर हो रहे थे। ये दीपक उसी ज्ञान के प्रतीक हैं। हम अज्ञान रूपी अमावस्या में क्यों न ज्ञान का दीपक जलाकर लोगों को अभयता या अमरत्व की ओर ले जाएं। ऋग्वेद में इसी संदर्भ में लिखा है-

उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभिनशन् तमिस्राः।।

अर्थात् हे ईश्वर! अमावस्या की काली और लम्बी रात्रि के समान हमारी समस्त तमिस्राएं नष्ट कर दो जिससे हम अभयता की उत्तम ज्योति को प्राप्त करके कृतार्थ हो जाएं। आप ही अमरता और अभयता की शाश्वत तथा पवित्र ज्योति देने वाले हो। वेदों में बताया गया है कि दुरित या दुर्गुण ही तमस् या घोर अन्धकार है तथा सद्गुण, सद्विचार, सत्कार्य, सदाचार तथा सद् भावनाएं ही ज्योति हैं। जब हम दुरितों को छोड़ते हैं तो सत्कर्मों का दीप ही अपने मन में जलाते हैं। यज्ञ सत्कर्मों के प्रतीक हैं। यज्ञ स्वयं दीप्यमान तत्त्व है जो तमस् का घोर शत्रु है। यज्ञ करते हुए हम ज्योति या ज्ञान की ओर बढ़ रहे होते हैं। जबकि अयज्ञिय जीवन तमसावृत होता है। ऋग्वेद में मन्त्र आया है-

ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञानन्नारे स्याम दुरितादभीके।।

ऋ. 3-39-7

ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनुष्यादारे स्याम दुरितस्य भूरे।।

ऋ. 3-31-8

वह दीपावली का पुण्य पर्व हमें दुरित से हटाकर यज्ञीय ज्योति का वरण करने के लिए प्रेरित कर रहा है। हमें अपने जीवन को ज्योतिर्मय बनाने का प्रयास करना चाहिए। आर्यों के लिए तो ईश्वर ने वेद रूपी ज्ञान की अखण्ड ज्योति प्रदान की है। जिसने इस महान् ज्ञान ज्योति को प्राप्त कर लिया है उसके लिए तो प्रतिदिन दीवाली है। जो भी व्यक्ति दुरितों से दूर तथा सत्कर्मों से मण्डित है वही आर्य है। यह आर्य अभय तथा अमरत्व का उपासक है। अमरत्व की प्राप्ति की प्रेरणा भी उसको वेद से ही मिली है। दीपावली की यह कालरात्रि हमें महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। लुप्तप्राय वेद ज्ञान का उद्धार कर स्वामी दयानन्द ने इस मानव जाति पर अभूतपूर्व उपकार किया है। यह पर्व उनके उपकारों का स्मारक पर्व है। हम इस अवसर पर उनका श्रद्धा सहित स्मरण करते हैं तथा उनके द्वारा स्थापित वेद ज्ञान की महत्ता का मनन करते हैं। ज्ञान के द्वार सबके लिए खुले हैं। महर्षि दयानन्द ने वेद रूपी ज्ञान की जो ज्योति प्रज्जवलित की है वह बन्द नहीं होनी चाहिए अन्यथा सम्पूर्ण विश्व अज्ञान अमावस्या की काली छाया से ग्रस्त हो जाएगा। इसलिए परमेश्वर ने कहा कि हे आर्यों! तुम्हारे लिए ज्ञान के ये ज्योतिर्मय कपाट सदा खुले हैं। उठो और विश्व को प्रकाशित कर दो।

दीपावली का पावन पर्व हमें ऐसे दीपक को जलाने की प्रेरणा देता है जो कभी न बुझे। ऐसा कभी न बुझने वाला दीपक हमारे अन्तःकरण में ही प्रदीप्त हो सकता है। जो दीपक बालक मूलशंकर के हृदय में शिवरात्रि की रात को प्रज्जवलित हुआ था। जिस दीपक के द्वारा बालक मूलशंकर महर्षि दयानन्द बनें और संसार से अज्ञान के अन्धकार को नाश किया। हम भी ऐसा ही दीपक अपने हृदय के अन्दर जलाएं जो समाज में फैल रही कुरीतियों, अन्धविश्वासों, पाखण्डों और बुराईयों को दूर कर सके।

thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द बलिदान प्रकरण

ऋषि दयानन्द के बलिदान का प्रकरण पाठकों के लाभार्थ इस विशेषांक में प्रकाशित किया जा रहा है। यह प्रकरण श्रीमद्दयानन्दप्रकाश से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती हैं। आशा है कि पाठक महानुभाव इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे।

स्वामीजी, उदयपुर से अतिसम्मान-पूर्वक विदा होकर, चित्तौड़ होते हुए फाल्गुन बदी अमावस 1939 को शाहपुरा में सुशोभित हुए निवास नगर के बाहर राजकीय उद्यान में किया गया। शाहपुराधीश ने श्री चरणों के दर्शन अनेक दिनों तक चित्तौड़ में किये थे। महाराज के अनुपम प्रभावजनक भाषणों से प्रभावित होकर राजाधिराज ने अपने नगर में पधारने के लिए उनसे विनय की थी। उन्होंने स्वीकार करते हुए कहा था कि अनुकूल अवसर आने पर अवश्य आऊंगा उसी प्रण की पालना के लिए वे शाहपुरा में पधारे।

श्रीस्वामीजी के शुभागमन को शाहपुराधीश ने अपने सौभाग्य की शुभ सूचना समझा। वे उसी सायं को श्रीसेवा में उपस्थित हुए और विनीत नमस्कार करके प्रश्न पूछने लगे। पाँच दिन तो राजाधिराज ने संशय-निवारण में बिताये। उसके उपरान्त सायं-समय के छः बजे से रात के नौ बजे तक वे एक घन्टाभर तो वार्त्तालाप करते और घन्टे तक अध्ययन करते। स्वामीजी राजाधिराज को मनु-स्मृति पढ़ाया करते। उनका समझाने का ढंग बहुत ही अच्छा था। फिर महाराज ने उनको योग-दर्शन पढ़ाया और उसकी समाप्ति पर कुछ एक भाग वैशेषिक के भी अध्ययन कराये। स्वामी जी प्रातः काल भ्रमणार्थ बाहर जाया करते थे। किसी किसी दिन राजाधिराज भी वहां जा दर्शन करते और प्राणायाम की विधि सीखते।

स्वामीजी महाराज ने अपने ग्रन्थों में संन्यास-धर्म का बड़ा महत्त्व दर्शाया है। वे प्रशान्त-चित्त, जितेन्द्रय और ज्ञानी जन ही को संन्यास का अधिकारी वर्णन करते हैं। साम्प्रदायिक संन्यास देने की विधि के वे बड़े भारी विरोधी थे। उन्होंने संन्यास लेकर भिक्षा का ग्रहण करना उन्हीं के लिए बताया है, जो जन जनता के हितार्थ अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं। लोक कल्याण के लिए रात्रिदिवा यत्नशील रहते हैं। सत्योपदेश और परोपकार कर्म में परायण पाये जाते हैं, और जो आठों पहर प्रजाप्रेम का परम पावन पुण्यपाठ पढ़ते रहते हैं। जो मनुष्य मानव हित-शून्य होकर अपाहिजों की भांति गली-गली में भटकते फिरते हैं, जन जन के आगे हाथ पसारते हैं और घर-घर के टुकड़ों के चटोरे बन जाते हैं वे आश्रम की मान-मर्यादा और महत्त्व को मूल से मिटाने वाले हैं।

शारीरिक सामर्थ्य रखते हुए, अनुपकारी जन का पराये अन्न पर पेट-पालना एक प्रकार का पतित कर्म है। इसलिये स्वामीजी ने जो लोग लोकहित के कार्य नहीं करना चाहते अथवा उनके करने में असमर्थ हैं उनके लिये सत्यार्थ-प्रकाश के प्रथम संस्करण में लिखा है, 'ब्राह्म जितने कर्म हैं उनको त्यागकर योगाभ्यासादि आभ्यन्तर कर्मों को यथावत् करें। अन्तःकरण की सारी मलिनता और राग-द्वेष आदि को छोड़कर, निश्चत होकर, सदा वेद का अभ्यास करें अपने पुत्रों से अन्नवस्त्र शरीर के निर्वाह के लिये लेवें। नगर के समीप एकान्त में वास करें। प्रतिदिन भोजन-आच्छादन घर से लेकर अपनी मुक्ति के साधन में तत्पर रहें।'

शाहपुरा में, स्वामीजी ने एक होनहार ब्राह्मण युवक को संन्यास देकर दण्ड धारण कराया। उसका नाम ईश्वरानन्द रखा। कुछ पठित भी था, परन्तु अधिक अध्ययन करने के लिए उसे प्रयाग भेज दिया गया। स्वामीजी ने वहाँ अपने यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता को लिख दिया कि जब तक यह साधु अध्ययन करता रहे इसे पाँच रुपये मासिक मिला करें।

गोपालराव नाम का एक ब्राह्मण भक्त श्री स्वामीजी का जीवन-चरित्र लिख रहा था। चित्तौड़ का वृत्तान्त लिखते हुए उसने वर्णन किया कि वहाँ श्रीमन्महाराणाजी, श्री महाराज को प्रतिदिन दो बार मिलते। इस पर एक नवीन वेदान्ती, साधु अमृतराम ने स्वामीजी को शाहपुरा में लिखा कि गोपालराव ने आपके सत्सङ्ग में राणाजी का नित्य प्रति दो बार आना लिखा है सो सर्वथा असत्य है।

स्वामीजी महाराज ने साधु महाशय का पत्र पाते ही गोपालराव को यह पत्र लिखा-'पण्डित गोपालराव हरि जी ! आनन्दित रहो। आज एक साधु का पत्र मेरे पास आया वह आपको भेजता हूँ। साधु का लेख सत्य है, परन्तु चित्तौड़ सम्बन्धी इतिहास में न जाने कहाँ से सुन सुनाकर ऐसा लिख दिया है। उस समय वहां उदयपुराधीश से मेरा समागम केवल तीन बार ही हुआ। आपने तो प्रतिदिन दो बार होता लिखा है आप जानते ही हैं कि ऐसे कार्यों के परिशोधन का अवकाश मुझे नहीं मिलता।

आप यद्यपि सत्य-प्रिय हैं और शुद्धभाव भावित हैं चित्त और हित से कार्य कर रहें हैं, परन्तु जब आपको मेरा ठीक-ठीक वृत्तान्त विदित ही नहीं है तो इसके लिखने में साहस कभी न कीजिए। थोड़ा सा भी असत्य मिल जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य भी बिगड़ जाता है। ऐसा ही निश्चय रखो और इस पत्र का उत्तर शीघ्र भेजो।

वैशाख शुक्ला द्वितीया १९४० दयानन्द सरस्वती

एक दिन, एक नैयायिक पण्डित स्वामीजी से सम्वाद करने लगा। उसको महाराज ने कहा कि देवदत्तो ग्रामं गच्छति इसका नव्य न्याय की रीति से अर्थ करो। वह आध घड़ी तक इसी पर बोलता रहा। फिर महाराज ने उसके कथन में दोष दिखाकर

thearyasamaj.org

खण्डन किया और कहा कि इसका सरल और सीधा अर्थ तो यह है कि देवदत्त ग्राम को जाता है, परन्तु ये काक-भाषाभाषी इसे ऐसा जटिल बनायंगे कि किसी के पल्ले कुछ पड़ने ही नहीं पाता। महाराज ने उसे यह भी कहा कि देवताजी ! पहले आर्ष दर्शनों के दर्शन कर लीजिए। इसके पश्चात् दार्शनिक बातचीत कीजिएगा।

एक दिन, एक मनुष्य स्वामीजी के निकट बतासे लाया। उन्होंने देखते ही कहा कि ये पत्थर पर चढ़ाये गये हैं, इसलिए मैं नहीं लेता। उसके पूछने पर, स्वामीजी ने उसके बतासों पर सिन्दूर का चिन्ह पड़ा हुआ दिखा दिया।

एक दिन, स्वामी जी बड़े बल से मूर्ति पूजा का खण्डन कर रहे थे। उस समय एक पण्डित ने कहा कि वाल्मीकि-रामायण में लिखा है कि श्री-राम ने महादेव का पूजन किया था-जैसे 'अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः'। स्वामीजी ने उत्तर में कहा कि इसमें तो प्रतिमा-पूजन का लेश भी नहीं है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यहाँ परमेश्वर ने कृपा की।

एक दिन, दधिमथ स्वामीजी के पास आया स्वामी जी ने कहा आइए व्यास जी बैठिये। आज मुझे भी छुट्टी है आपसे वार्त्तालाप करने में पूरा सुभीता होगा व्यास ने निवेदन किया-'भगवन् ! छुट्टी तो बद्ध लोगों के लिए हुआ करती है। आप तो परमहंस हैं। पूर्ण स्वाधीन और स्वच्छन्द हैं। आपको ऐसा कौन बन्धन शेष है जिससे आपने आज अवकाश मनाया है।

स्वामीजी ने उत्तर दिया, 'मैं सारे धार्मिक बन्धनों को मानता हूं। वर्णाश्रम से, नीति-रीति से मैं उच्छृंखल और निरंकुश नहीं हूं। स्वच्छन्दता पूर्वक ही वेद-भाष्य आदि का कार्य किया करता हूं। आज उससे छुट्टी मनाई है।

एक रामस्नेही सज्जन ने, स्वामी जी के समीप आकर निवेदन किया, केवल नाम ही से निस्तार हो जाता है। भव-सागर पार उतरने के लिए नामों के गुणों को जानना कोई आवश्यक नहीं है।'

स्वामीजी ने कहा, 'परमानन्द की प्राप्ति के लिए नामों के गुणों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। जैसे शब्द के साथ ही उसके अर्थ का बोध हो जाता है, जल कहते ही शीतगुण-प्रधान, द्रवीभूत जल पदार्थ की प्रतीति हो जाती है, ऐसे ही नाम लेते ही उसके वाच्य का ज्ञान हो जाना चाहिये और उसकी प्राप्ति की क्रिया करना परमावश्यक है ऐसे ही नाम और उसके अर्थ को जानना तथा उसकी उपलब्धि के लिए प्रत्याहार, धारणा और ध्यान आदि क्रिया-कलाप का करना अतीव आवश्यक है।'

स्वामीजी कच्ची पक्की रसोई के झगड़े को एक आडम्बर ही समझते थे। एक साधु स्वामीजी के पास पढ़ता था। वह एक दिन चौके के बखेड़े पर रसोइए के साथ लड़ पड़ा। स्वामी जी ने उसे बुलाकर कहा, 'आप संन्यासी भी हो गये परन्तु चौके चूल्हे का भ्रम-जाल आपके पीछे पड़ा ही रहा। कच्चे पक्के के पाप पाखण्ड ने आपका पिण्ड न छोड़ा। भाई ! यहां तो चारों वर्णों के परस्पर भेद-भाव को मिटाना होगा। सार्वजनिक बन्धु-भावना की भूमि पर प्रेम का प्रासाद निर्माण करना होगा।

महाराज ने रामस्नेहियों के महन्त को धर्म-चर्चा के लिए आहूत किया। परन्तु वे महन्त जी तो अपने आसन पर ही बैठे बढ़-बढ़ कर बातें बनाना जानते थे। बेतुकी उड़ाना ही उन्हें आता था। सिर-पैर-विहीन कथायें, अपने सेवकों के मस्तक में उडेलते जाना उनके कर्त्तव्य की इति श्री थी। वे भोलेनाथ, भला शास्त्रार्थ और सम्वाद को क्या जानें ! इसलिए सम्वाद न हो सका।

स्वामी जी ने मनोनिग्रह भी परम कोटि का किया हुआ था। उनकी सब वृत्तियां वशवर्तिनी थीं। मस्तक के सूक्ष्मतम् तन्तुओं पर भी उनका इतना वशीकार था कि निद्रा तक उनके सर्वथा आधीन थी। शाहपुरा में मध्यान्ह समय भोजन पाकर, स्वामीजी स्वल्प समय के लिए सो जाया करते। उन दिनों में सोलह मिनट तक नींद लिया करते थे। सोते उठकर मुंह हाथ धोने और कुल्ले करने के लिए जल लेते। नौकर भी घड़ी देखता रहता। ज्योंही सोलहवां मिनट आरम्भ होता त्यों ही वह जल का कलसा और अंगोछा ले, हस्त-मुख प्रक्षालन करने के स्थान पर, जाकर खड़ा हो जाता। ठीक सोहलवें मिनट की समाप्ति पर, जगद्गुरु जग जाते और तत्काल मुखादि धोकर कार्य पर आ बैठते।

रात्रि के समय वे ठीक दस बजे शुद्ध, स्वच्छ, साधारण और शुभासन शय्या पर शयन किया करते। भक्तजनों से वार्तालाप करते हुए जिस समय दस बजने की पहली 'टन' की ध्वनि होती वे तुरन्त खाट पर टेढ़े हो जाते। दूसरी 'टन' की ध्वनि पर प्रगाढ़ निद्रा में लीन जान पड़ते। उनके इस असाधारण सामर्थ्य पर सभी को परमाश्चर्य हुआ करता था।

योगानुष्ठान से उनकी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ इतनी निर्मल हो गई थी, कि सूक्ष्मतम विषय को सुगमता से ग्रहण कर लेती थीं। योग-दर्शन कथित दिव्य सम्वित् उन्हें प्राप्त थी।

स्वामीजी के निवास स्थान पर खस की टट्टियाँ लगा दी गई थीं। दोपहर के पश्चात् जब लू चलने लगती, ग्रीषम का भीषण उत्ताप, जब वायु-सहिंत भूमि को उत्तप्त बना देता तो उस समय, उन टट्टियों पर जल सींच दिया जाता, जिससे सारी कोठरी की वायु सु-शीतल और सु-गन्धित हो जाती।

एक दिन मध्यानोत्तर समय, जब जल छिड़का गया तो महाराज ने कहा कि आज कहीं से दुर्गन्ध आ रही है। सेवकों ने इधर-उधर सर्वत्र घूम कर देख भाल की, परन्तु कहीं भी कोई सड़ी गली वस्तु दिखाई न दी। टट्टियों में जल सींचने के लिए एक कुण्ड में कुछ पानी एकत्र रहा करता। उसका बासी जल नित्य निकाल कर नया जल उसमें डाला जाता। भगवान् ने सेवक को बुलाकर पूछा कि बताओ, क्या तुमने खस की टट्टियों पर कुण्ड का बासी पानी डाला है ?

उसने विनती की कि महाराज। वैसे तो कुण्ड में से कल का सारा पानी मैंने उलीचकर निकाल दिया था, कदाचित् घड़ा आध घड़ा रह गया होगा। परन्तु उसमें लगभग सौ घड़े नये जल के

thearyasamaj.org

डलवाये हैं। तब महाराज ने कहा कि उसी थोड़े से बासी जल की दुर्गन्ध आ रही है। अच्छा इस समय टट्टियाँ उतार दो और फिर कभी इन पर ऐसा जल न सींचना। भगवान् की घ्राण-इन्द्रिय की इतनी प्रबल शक्ति का पूर्ण परिचय पाकर भक्तों को पूरा निश्चय हो गया कि इनको योगबल ही से ऐसे सूक्ष्म विषय का ज्ञान हो जाता है।

जिस समय श्री महाराज उदयपुर में धर्मोपदेश दे रहे थे उन्हीं दिनों श्री महाराजा प्रतापसिंह जी और राव राजा तेजसिंह जी के प्रार्थना-पत्र श्री सेवा में आये थे। उनमें उन्होंने जोधपुर पधारने के लिए अत्याग्रहपूर्वक विनती की थी। महाराज ने उन महानुभावों की उत्कृष्ट उत्कण्ठा का आदर करते हुए लिख दिया था कि हम शाहपुरा से होकर जोधपुर आएंगे।

शाहपुरा में महाराजा जसवन्त सिंह जी का लिखा हुआ निमन्त्रण-पत्र आया जिससे श्री महाराज ने शाहपुरा से प्रस्थान करने का समय ज्येष्ठ कृष्ण ४ शनिवार सम्वत् १९४० और दिन के दस बजे नियत कर दिया।

स्वामी जी की जोधपुर जाने की सु-सज्जा देखकर, शाहपुराधीश जी ने श्रीसेवा में निवेदन किया, ''भगवन् ! राजा लोग भोग विलास और मन-माने आमोद-प्रमोद में निमग्न रहा करते हैं। जहाँ आप पधारने लगे हैं वहां वाराङ्गनाओं का अधिक खण्डन न कीजियेगा।''

स्वामीजी ने उत्तर दिया-''मैं बड़े-बड़े कंटीले वृक्षों को नुहरने से नहीं काटा करता। उनके लिये तो अति तीक्ष्ण शस्त्रों की आवश्यकता होगी।''

शाहपुराधीश ने महाराज को विदा करते समय २५० ढाई सौ रुपये श्री चरणों में निवेदन किये। और पचास रुपये मासिक एक उपदेशक के लिए देने का वचन दिया। विदाई के समय अति भक्तिभाव से सभा में यह सम्मान पत्र श्री महाराज को सुनाया गया:

स्वस्ति श्रीसर्वोपकारार्थ कारुणिक पर्महंस परिव्राजकाचार्य सरस्वती जी महाराज के चरणारविन्द में महाराजाधिराज शाहपुरेश की बार-बार नमस्तेऽस्तु !

अपरञ्च यहाँ आपका विराजना सार्द्धद्वय मास पर्यन्त हुआ। तथापि आपके सत्धर्मोपदेश के श्रवण से मेरी आत्मा तृप्त न हुई। आशा थी कि आप ग्रीष्मान्त अत्रस्थित होते, परन्तु जोधपुराधीशों की ओर से दर्शनों की, वेदोक्त धर्मोपदेश ग्रहण की, सत्याचरण और असत्य त्याग की तथा आपके मुखारविन्द से श्रवण करने की अभिलाषा देखकर आपने वहां पधारना स्वीकार किया। भवच्छरीर भी करोड़ों मनुष्यों के उपकारार्थ प्रकट हुआ है यह समझकर, मेरी भी सम्मति यही हुई है कि आपका वहां पधारना ही उत्तम है। यही समझकर यहां विराजने की प्रार्थना नहीं की। आशा है कृतकृत्य करने के निमित्त पुनरागमन करेंगे।

सम्वत् १९४० ज्येष्ठ कृष्ण ४ (हस्ताक्षर) नाहरसिंहस्य।

जोधपुर जाते समय आर्य लोगों ने स्वामीजी से कहा, ''जहां आप जा रहे हैं वहाँ के लोग कठोर प्रकृति के हैं। कहीं ऐसा न हो कि सत्योपदेश से चिढ़कर श्रीचरणों को पीड़ा पहुंचायें।''

स्वामी जी ने उत्तर दिया-''यदि लोग, हमारी अंगुलियों को बत्तियाँ बनाकर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहाँ जाकर अवश्य सत्योपदेश दूंगा।''

महाराज अति सम्मानपूर्वक शाहपुरा से विदा हुए और ज्येष्ठ वदी ५ को अजमेर ठहरकर पाली रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। वहां, जोधपुर के महाराजा की ओर से चारण नवलदान आदि सज्जन, स्वामीजी को लिवा ले जाने के लिए, एक हाथी, तीन ऊंट, तीन रथ, एक सेज-गाड़ी और चार अश्वारोही सैनिक लेकर, आ गये।

पाली से चलकर श्री महाराज दो रातें मार्ग में रहे और ज्येष्ठ वदी ८ को जब, जोधपुर से तीन कोस के अनन्तर पर रह गये तो प्रात:काल के वायु से लाभ उठाने के लिए पैदल चलने लगे। साथी भी यानों से उतर खड़े हुए और पीछे-पीछे पैदल हो लिये।

जोधपुर-नरेश की ओर से महाराज के स्वागत का अत्युत्तम प्रबन्ध किया गया। रावराजा तेजसिंह जी, और राव राजा ज्वानसिह जी, परि-व्राजकाचार्य जी के सम्मुखाभिगमन और प्रतिग्रहण करने के लिए, रत्नगढ़ तक पैदल गये। उन्होंने दूर से देखा कि एक काषायाम्बरधारी संन्यासी गम्भीर गति से चलते चले आ रहे है। उनके एक हाथ में एक लम्बायमान दण्डा है। उनका विशाल भाल बाल-काल के सूर्य की किरण से महामूल्य मणि के समान, दीप्तिमान् हो रहा है। मनोहर मुखमण्डल, मेघ-युक्त चन्द्रमा की भाँति, चमकता हुआ दर्शक के चित्त को आल्हादित कर रहा है। उस पर अपूर्व प्रतिभा की शुभ्र-प्रभा पूर्ण-रूप से विराजमान है। नीले गुलाबी डोरों से खचित उनके विमल रसीले नेत्रों की निर्मल ज्योति, दर्शक के अन्त:करण की कोठरी को जगमगाये जाती है। उनके नव-पल्लवसमान होठों पर, मन्द मुस्कान की मनोगम रेखा रह-रह कर चमकती है। दाड़िम के दानों की भाँति, उनके उज्ज्वल दाँतों की पाँति, पवित्र प्रभा नि:सरण कर रही है। उनकी दोनों भुजायें घुटनों को स्पर्श करती हुई शोभायुक्त बन रही हैं। उनका वर्ण, तप्त स्वर्णसमान है। गौरव-सूचक, गेरूए वेष में उनकी निष्कलङ्क और कुन्दन-कल्प काया की अलौकिक छटा, ऐसी दिखाई देती है जैसे स्वर्ण के सिंहासन पर विशुद्ध स्वर्ण की प्रतिमा, सौन्दर्य का स्त्रोत बन रही हो। सम्पूर्ण पवित्रताओं से परिवेष्टित, तेजोधाम, संन्यासी राज धीरे-धीरे जब दोनों राव राजाओं के निकट पहुंचे तो उन्होंने नम्रीभूत होकर गुरुदेव के अरुणवर्ण, चारु चरण अपने हाथों से चर्चित किये। विनीत भाव से कुशल-मङ्गल पूछा महाराज ने भी उनको आशीर्वाद देकर योग-क्षेम पूछा और कहा, ''आप इतनी दूर पैदल चलकर क्यों आये हैं ? आप को इसमें कष्ट हुआ होगा।''

thearyasamaj.org

रावराजा तेजसिंहजी के हृदय-देश में तो श्री दर्शनों ही से भवभारनाशिनी, भगवती, भक्ति-भागीरथी का प्रादुर्भाव हो गया था, श्रद्धा की लता का शुभांकुर निकल आया था। उन्होंने झुककर निवेदन किया कि श्री महाराज की अगौनी के लिए पैदल चलकर आना हमारे लिए, परम पुण्य के उपार्जन का एक साधन हो गया है। दोनों राव राजाओं ने, अपने साथियों-सहित, अति सम्मान और समारोह से स्वामी जी को ले जाकर मियाँ फैजुल्ला खां के उद्यान में ठहराया। उस उद्यान के द्वार पर महा-राजा श्री प्रतापसिंह जी उपस्थित थे। उस समय स्वामीजी के साथ माननीय रायबहादुर श्री गोपालराव हरि देश-मुख के सुयोग्य पुत्र लक्ष्मणराव जी भी थे। ये खानदेश में असिस्टेंण्ट कलेक्टर थे। वहां से छुट्टी लेकर महाराज से योगाभ्यास सीखने आये थे।

जोधपुराधीश की ओर से चारण नवलूदान, चार सेवकों-समेत श्री सेवा में नियुक्त हुए। छः सैनिकों-सहित एक हवलदार पहरे पर लगाया गया। महाराज के दुग्ध पान के लिए एक गाय आ गई और राव राजा तेजसिंह जी को भी महाराजा की आज्ञा हुई कि वे श्री स्वामी जी की सेवा सुश्रूषा की स्वयं देखरेख रखें। रावराजा महाशय तो महाराज के भक्त बन ही चुके थे, इसलिए उन्होंने इस आदेश को अपने सौभाग्य-सूर्य के उदय के समान ही समझा।

जिस दिन महाराज जोधपुर में पधारे उसी दिन से सत्सङ्गियों की मण्डलियां उनके पास आने लगीं। वार्तालाप और प्रश्नोत्तर द्वारा ही अनवरत रूप से, उपदेशवारि वर्षण होने लग गया। उनकी उक्तियाँ और प्रयुक्तियाँ श्रोताओं की लहलहाती चित्त-लताओं को धीमे-धीमे पड़ने वाली सावन की फुहार की तरह, शान्त करती थीं। राठौर राज्य के सरदार और राठौर-वंश के राजपूत प्रभु दयानन्द के एक-एक करके शिष्य बनने लग गये। महाराजा श्री प्रतापसिंह जी का हृदय-कमल महाराज की अनन्य भक्ति की सुगन्धि से परम सुवासित हो गया था। उनको गुरु महाराज के सुख का रात दिन ध्यान रहता। वे प्रतिदिन नियमपूर्वक और बड़ी भावना से सत्सङ्ग सुधासिन्धु में स्नान करके अपने अहोभाग्य मानते। उनकी इस अपरिमित प्रीति से, अन्य अनेक राजपूत भी प्रभावित हो रहे थे। राठौर-राज्य में नमस्ते की मधुर और कर्ण-कोमल ध्वनि सर्वत्र गूंजती सुनाई देती थी। आर्यत्व का सर्वत्र प्रचार होता चला जाता था।

महाराज के जोधपुर में जाने के पश्चात्, सत्रहवें दिन श्री महाराजा यशवन्त सिंह जी बड़े समारोह से उनके दर्शनों को आये। समीप आकर उन्होंने बड़ी विनीतता से चरण स्पर्शपूर्वक नमस्कार की। एक सौ रुपये और पाँच सुवर्ण मुद्रायें भेंट में रखीं। यद्यपि कुर्सियों का यथोचित प्रबन्ध था और श्री स्वामीजी महाराजा महाशय को कुर्सी निमन्त्रित भी कर रहे थे, परन्तु आश्रम-मर्यादा और विनयधर्म में निपुण, जोधपुराधीश नीचे फर्श पर ही बैठ गए। उन्होंने साथ ही यह भी कहा, ''आप हमारे स्वामी हैं और हम आपके सेवक हैं, इसलिए आप के सामने नीचे आसन पर बैठने ही में हमारी शोभा है।''

श्री स्वामीजी, महाराजा महाशय को नीचे बैठा देखकर उठ खड़े हुए और कहने लगे कि आपका ऐसे आसन पर विराजना मेरे मन को अच्छा नहीं लगता। साथ ही उन्होंने सम्मान-पूर्वक शिष्य पद्धति से महाराजा का हाथ अवलम्बन करके उनको कुर्सी पर ला बिठाया। परमहंस जी के आर्योचित्त औदार्य का परम प्रमाण, प्रत्यक्ष रूप में पाकर, राठौर-वंश के सभी सरदार मोहित हो गये। और मन-ही-मन उनकी प्रशंसा करने लगे। तीन घण्टे तक महिपाल महर्षि के सत्संङ्ग में बैठकर मनुस्मृति से राजधर्म का श्रवण करते रहे। स्वामीजी के वचन उनके लिये अपूर्व रुचिकर थे, उनके आत्मा में बसते जाते थे। उनके अन्तःकरण में रचते जा रहे थे। थोड़ी देर तक कुछ वार्तालाप भी हुआ और फिर महाराजा ने वहाँ से उठते समय निवेदन किया-''भगवन् आप ऐसे परदुःख भजन करने वाले दयालु महात्माओं का यहां पदार्पण करना अति दुर्लभ है। यह हमारे सौभाग्य-प्रभात का शुभ-सूचक शुभागमन हैं जो श्रीमन्त ने यहां अपने देव-दुर्लभ दर्शन दिये हैं ! इसलिए, श्री सेवा में यह विनीत विनय है कि पूज्य-पाद जब तक यहाँ निवास करें, अपने उपदेशामृत से लोगों को कृतार्थ करते रहें।

महाराजा के मिलाप के दूसरे दिन ही से, स्वामीजी ने विविध विषय सम्बन्धी व्याख्यान वारिवर्षण की घोषणा कर दी। जिस बङ्गले में महाराज विराजमान थे उसके विशाल आङ्गन ही में उपदेशों का प्रबन्ध किया गया। समय सायं के चार बजे से छः बजे तक नियत हुआ।

पहले दिन जब महाराज व्याख्यान स्थान को पधारने लगे तो राव राजा तेजसिंह जी ने प्रार्थना की कि भगवन्, महाराजा महाशय के रहन सहन के विषय में कुछ भी न कहिएगा।

स्वामीजी ने किंचित् बलपूर्वक कहा कि क्या आप मुझसे झूठ कहलाना चाहते हैं? स्मरण रखिए, मैं जो कुछ कहूंगा सत्य ही कहूंगा। मेरा कथन कभी असभ्यता सूचक भी नहीं हुआ करता। और न ही मैं, किसी व्यक्ति विशेष का नाम निर्देश करके, कभी कर्ण कटु कटाक्ष किया करता हूं।

राव राजा महाशय ने सिर झुका दिया और महाराज व्याख्यान-स्थान में जा पहुंचे और एक स्वच्छ और सुन्दर सिहासन पर आरूढ़ हो गये। उस दिन महाराजा यशवन्तसिंह जी के बिना राज्य के सारे उच्च पदाधिकारी कर्मचारी वहाँ एकत्र हुए। सेठ साहूकार आदि सज्जन भी आये। सभी उपस्थित सभ्य चातक की भांति उनके वचन-बिन्दु के प्यासे थे। चकोर की भांति तृषित और निर्निमिष नयनों से उनके विमल मुख-चन्द्र के दर्शन पा रहे थे।

ठीक समय पर स्वामीजी ने अपने दोनों नेत्रों के पलक-द्वार बन्द कर लिये और उनकी ज्वलन्त ज्योति को उलटकर, त्रिकुटि-मन्दिर को जगमगा दिया फिर भव-भय हरण, परम पावन प्रणव

thearyasamaj.org

का गम्भीर नाव ऐसा गुंजाया कि सब श्रोताओं की मन-वृत्तियाँ मूर्छित हो गई। ऐसा प्रतीत होता था कि कोई वादन कला-प्रवीण जन किसी मन्दिर के द्वार बन्द करके वीणा बजा रहा है। सङ्गीत रस ने मानों इस स्वर में अवतार धारण कर लिया है। जैसे बसन्त में, पुष्पित लता पर भ्रमर गूंजता है उसी प्रकार होंठ बन्द करके महाराज ओम्ध्वनि गुंजाते थे, परन्तु उसका अलौकिक माधुर्य मोहिनी मन्त्र का काम करता जाता था। ग्रीष्म के भीषण उत्ताप से सन्तप्त वनराजी पर, जैसे बदली छमाछम बरसकर, उसे शान्त बना रही हो, उसी प्रकार वह स्वर-रस श्रोताओं के वृत्ति बन पर वर्षण करके उसे अननुभूत आनन्द प्रदान कर रहा था। वह सहस्त्रों मनुष्यों की सभा थी, परन्तु कोई भी मनुष्य हिलता डुलता तक न था। सर्वत्र मौन छा रहा था। प्रशान्ति का अटल राज्य विराजमान था।

प्रत्येक उपस्थित को यह प्रतीत होता था कि यह अपूर्व नाद मेरे कानों के अति निकट गूंज रहा है। उससे दशों दिशायें निनादित हो रही हैं। सारी सभा, कई मिनटों तक एकचित्त होकर अनुपम नाद-रस लूटती रही। फिर जब श्री स्वामीजी ने मन्त्र गायन आरम्भ किया तब लोगों की चित्तवृत्तियाँ एकाकार पद से नीचे उतर सकीं। जोधपुर के अधिवासियों के लिए वह आनन्द सर्वथा नया था। उन्होंने ऐसे स्वर्गीय स्वादु रस का पहले कभी स्वप्न में भी आस्वादन नहीं किया था। इसलिये हर्ष के उत्कृष्ट उत्कर्ष से उनके हृदय उछलने लग गये।

महाराज का व्याख्यान जब आरम्भ हुआ तो सबकी दृष्टियाँ सिमिट कर उनके दैवी स्वरूप की अद्‌भुत छटा को निरखने लगीं। सबके श्रोत्र एक रूप होकर उनके वचनामृत पान करने लगे। उनका प्रथम व्याख्यान 'ईश्वर' विषय पर था। उसमें उन्होंने ईश्वर के स्वरूप का निरूपण ऐसे अनुपम प्रकार से किया कि भक्ति भाव के भादों की झड़ी लग गई।

लोग परम्परा से पुराणों की पुरानी चासनी चखते-चखते उकता गये थे। देवमाला की मनोरंजक, रोचक, भयानक, और कल्पित कथा-कहानियों से उनके जी ऊब गए थे। महाराज के यथार्थ उपदेशों से उनके हृदय के कपाट खुल गये। उनको छल-बल रहित सरल सत्य की समझ पड़ी।

प्रतिदिन, श्री महाराज सायं के चार बजे व्याख्यान-स्थान पर आ विराजते और ज्ञान-गङ्गा बहाकर श्रोताओं को निहाल कर देते। वे अपनी शाण-शोणित कुशाग्र बुद्धि के प्रबल प्रताप से युक्तियों और प्रमाणों का ऐसा तार लगाते कि सुनते-सुनते ही सारे भ्रम दूर हो जाया करते। यद्यपि व्याख्यान के अनन्तर शंका-समाधान के लिए समय दिया जाता परन्तु विरला ही कोई उस समय कुछ पूछता। हां, कभी कभी कोई अपनी पुरानी परिपाटी को पीटने वाला, पुराण-पद्धति का पण्डित कुछ पूछ लेता, परन्तु एक दो बार बोलकर ही जी छोड़ बैठता।

क्षीर-नीर का निर्णय करने वाले परमहंस के सत्सङ्ग में न्याय होता था, नीति होती थी, युक्तियां होती थीं, प्रमाण होते थे और सर्वोपरि सत्य का प्रकाश होता था। कितना ही बली-छली कोई क्यों न हो वहाँ आकर वह छल छिद्र की सारी चालें चूक जाता। उसका हृदय शून्य हो जाता। उसे पूछने योग्य कोई बात सूझती ही नहीं थी। वह बचाव इसी बात में समझता था कि उस नर सिंह के सामने ही न आये।

जोधपुर में उन दिनों एक गणेशपुरी नाम प्रसिद्ध संन्यासी आये हुए थे। वे प्रबल पण्डित भी थे। अपने डेरे पर स्वामी जी के विरुद्ध बोलने में भूतलाकाश एकाकार कर देते। अपने पक्ष की पुष्टि में, छाती ठोंककर प्रमाण देने के लिए समुद्यत हो जाते। कुछ सज्जनों ने उनको जाकर कहा, "महात्मा जी ! स्वामी दयानन्द जी अपने शास्त्र-सामर्थ्य और यौक्तिक बल से देव-माला की लड़ी को तोड़ रहे हैं। आपकी पुराण-पाठ की पक्की और परिपुष्ट पटड़ी को उखाड़े चले जाते हैं। आप चलकर उनसे शास्त्रार्थ कीजिए। नहीं तो बड़ी देर का बना बनाया आडम्बर बिगड़ जायेगा।"

गणेशपुरी ने आज-कल करते कई दिन तो टालमटोल में बिता दिये, परन्तु जब देखा कि ऊपर की टोप-टाप बनाए रखने के लिए शास्त्रार्थ की चक्की में पिसना ही पड़ेगा तो स्पष्ट कह उठे, 'भाई वे तो जो कुछ कह रहे हैं सो सब सत्य है। उनके सम्मुख होने का न तो हममें साहस है और न ही सामर्थ्य।" जब उनको लोग बहुत विवश करने लगे तो वे अपना डेरा-डण्डा उठाकर वहाँ से चुपके ही कहीं चल दिये।

राव राजा ज्वानसिंह जी आदि अनेक सज्जनों ने सत्संग में प्रश्नोत्तर करके अपने सारे संशय मिटाये। एक दिन श्री महाराजा प्रतापसिंह जी ने श्री सेवा में विनीत निवेदन किया कि भगवन्! आप ब्रह्म हैं अथवा जीव ?

उन्होंने उत्तर दिया मैं जीव हूं। महाराजा महाशय ने कहा कि "हमारे पण्डित तो हमें ब्रह्म बताया करते हैं।"

स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आप ब्रह्म होते तो आप में ब्रह्म के गुण भी पाए जाते। उसके सर्वज्ञता आदि गुण आप में नहीं है इस लिए आप जीव हैं। ब्रह्म में भूल और अशुद्धि का मानना भारी भ्रम है।

महाराजा महाशय ने फिर निवेदन किया-"भगवन् ! कोई ऐसा उपाय अथवा साधन बताइए जिससे विविध वासनाओं के पाश में बद्ध, मेरे जैसे मनुष्य की भी मुक्ति हो जाए।" महाराज ने कृपा की-"आप लोगों के दूसरे कर्म तो मोक्ष-मार्ग के नहीं हैं, किन्तु एक काम करना आपके आधीन है और वह निरपेक्ष न्याय करना है। यदि आप प्रजा का न्याय करने में न्यूनता नहीं आने देंगे तो आपका आत्मा, इसी से, निर्लेप होकर निर्वाण-पद पा लेगा।"

महाराजा प्रतापसिंह जी एक दिन श्री स्वामीजी को अपना दुर्ग दिखाने के लिए ले गये। उन्होंने अनेक अद्‌भुत वस्तुओं को देखते-देखते राठौर वंश के प्रबल प्रतापी पुरुष, महाराजा प्रतापसिंह

thearyasamaj.org

का एक हस्त-चित्र भी देखा। उनका दाढ़ी-रहित मुखमण्डल, बल खाती बाङ्की मूछों से तेजो-धाम प्रतीत होता था। स्वामी जी ने महाराज को सम्बोधन करके कहा, ''टुक इस छवि की छटा देखिए। आपके पुरातन पुरुषों के मुखों पर ऐसा तेज और गौरव हुआ करता था। देखिए, इस चित्र ही से कैसी वीरता टपके पड़ती है।''

महाराज ने एक दिन, अपने ओजस्वी भाषण में, वैष्णवों के चक्राङ्कित सम्प्रदाय पर प्रबल टीका टिप्पणी की। उनके और अलीक अमूलक मन्तव्यों का जी खोलकर खण्डन किया। उनके तिलक छाप को निराधार और मिथ्या-मूलक बताया। उस सम्प्रदाय के अनेक जन उस सभा में बैठ बल तो बहुत खाते थे, परन्तु उनका वश कुछ न चलता था। महाराज की युवतियों के अनिवार्य और अचूक प्रहारों की चोट निरे पुरे चिढ़ने से क्यों कर दूर हो सकती थी।

एक पहाड़ी पण्डित श्रीराम, बड़ा कट्टर चक्राकित था। उसके वहाँ चेले-चाँटे भी बहुतेरे थे। वह आगे बढ़ा और शास्त्रार्थ के लिए लिखा-पढ़ी करने लगा। परन्तु किसी एक नियम पर न टिका। अन्तपर्यन्त यही कहता रहा कि मेरे महता विजयसिंह को मध्यस्थ मानो तो मैं शास्त्रार्थ करने को कटिबद्ध हूं। स्वामीजी ने उसको उत्तर दिया कि महता महाशय संस्कृत भाषा से सर्वथा शून्य है। इसलिए उनका मध्यस्थ नियत होना अनुचित है। कोई विद्वान पंडित चुनकर बताइए। उनको मध्यस्थ बना दिया जाएगा। परन्तु उस पण्डित महाशय ने महाराज के कथनों को स्वीकार न किया।

श्री राम ने सामने आकर शास्त्रार्थ तो न किया, परन्तु अपने अनुगामियों के हृदयों में विषय वैर की आग सुलगा दी। महता महाशय के मन में भी एक विकट्ट गाँठ पड़ गई। कुछ एक वैष्णव लोग जैसे भी हो, पूज्यपाद के अप्रिय करने में प्राण-पण से परायण हो गये।

महाराज, अपने व्याख्यानों में सभी मत-मतान्तरों पर, प्रसङ्गानुसार समालोचना कर दिया करते थे। कोई कितना ही सत्ताधारी सामने क्यों न बैठा होता, प्रकरणानुसार वे उसके मत के भ्रम गूलक विचारों पर आक्षेप कर ही देते। जोधपुर में भगवान् ने मुसलमान मत पर भी भाषण दिया। उसको सुनकर भैया फैजुल्ला खाँ के तन बदन में आग सी लग गई। वे बहुत ही चिढ़कर बोले- ''स्वामी ! यदि मुसलमानों का राज्य होता तो आपको लोग जीवित जागृत न छोड़ते। उस समय आप ऐसे भाषण भी न कर पाते।''

स्वामीजी ने खाँ महाशय को बड़ी धीरता से उत्तर दिया- ''यदि ऐसा अवसर आता मैं भी कभी थरथराहट में न आता और निठल्ला न बैठता, किन्तु निधड़क मन से, दो चार वीर राजपूतों को पीठ ठोंककर विरोधियों के धुर्रे उड़ा देता। ऐसा छकाता कि उनके छक्के छूट जाते।'' महाराज के इस उत्तर से खाँ महाशय छटपटा उठे।

उनके भाषण में, एक दिन एक मुसलमान युवक, सहसा झिड़झिड़ा-कर उठ खड़ा हुआ। एक हाथ तलवार की मुट्ठी पर रख झुंझलाकर बोला-''आप मुंह सम्भालकर बोलें। हमारे मत के विषय में कुछ भी न कहें।''

स्वामी जी ने, अति कोमलता से उस युवक को कहा-''सौम्य! आपके अभी दूध के दाँत हैं। संसार के उतार-चढ़ाव का आपको कुछ भी अनुभव नहीं। आप तो कोरे खङ्ग को हाथ से थामने वाले हो, उसे कोश से निकाल नहीं सकते। भला चना भड़केगा तो क्या भाड़ फोड़ डालेगा। यदि हम ऐसी थोथी झिड़का झिड़की से झिझकने लगते तो इतना बड़ा बोझा कैसे उठा सकते।''

यह युवक थरथराता हुआ बैठ गया और इतना लज्जित हुआ कि फिर ऊपर को सिर न उठा सका।

भैया फैजुल्ला खाँ के हृदय में उपर्युक्त बातचीत से बहुत से पेचीले बल पड़ गये। वे प्रतिकार के उपाय के लिए चिन्तित रहने लगे।

महाराज का हृदय सरल था। वे सर्वसाधारण के हितार्थ सत्योपदेश देते थे। लाग-लपेट की बात बनाना और शक्तिशालियों की चापलूसी करना कभी स्वप्न में भी नहीं सीखे थे। संसार छल-कपट से भरा है। इसमें खरे खोटे को परखने वाले मनुष्य विरले ही मिलते हैं। उस महापुरुष के मानस महत्त्व को मर्त्यलोक के कीटाणु क्या जानते ! हास-विलास और विषयानन्द के जीव-जन्तुओं को तो वे बतक्कड़ ही अच्छे लगते हैं, जो मुंह-देखी बातें करते हैं। चबा-चबाकर चिकनी चुपड़ी गप्पशप हांकते रहते हैं। बड़े मनुष्यों की मिथ्या प्रशंसा के पुल बाँध देते हैं। भगवान् दयानन्द, किसी के षडयन्त्र रचना पर कुछ भी ध्यान न दें, अपने नियत कार्यों को किये जाते थे। वे प्रातः समय भ्रमण करते जाते और एकांत विजन प्रदेश में बैठ घण्टा भर ध्यान में निमग्न रहते थे। भ्रमण-काल में वे एक कौपीन और धोती-मात्र वस्त्र तन पर रखते, पांव में जूता धारण करते और हाथ में एक सुदृढ़ दण्ड रखा करते। जब स्वस्थान पर लौट आते तो पन्द्रह बीस मिनट तक कुर्सी पर बैठकर, एक गिलास दूध का पीते। तत्पश्चात् ठीक आठ बजे वेद-भाष्य का परमोपयोगी कार्य करना आरम्भ कर देते। ग्यारह बजे यह कार्य बन्द कर देते और फिर स्नानादि करके भोजन पाते। उनका भोजन परिमित और बहुत ही सादा होता था। सब वस्तुयें मिलाकर उनका आहार डेढ़ पाव के अन्दर ही होता था। भोजनान्तर महाराज कुछ काल के लिए विश्राम भी किया करते।

दोपहर ढले, एक बजने पर महाराज सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार-विधि की कापियों के प्रूफ देखते, उनका संशोधन करते। तत्पश्चात् चिट्ठी पत्री का काम करने लग जाते। बीच में यदि कोई आवश्यक कार्य आ पड़ता तो वह भी कर डालते। चार बजे से कुछ पूर्व स्नान करके सारे तन पर मिट्टी भी रमाया करते। मस्तक छाती और भुजाओं पर लेप लगाते। रेशमी धोती और रेशमी साफा धारण करके एक लम्बा चोगा पहनते। उसके पश्चात्

thearyasamaj.org

ठीक चार बजे व्यास गद्दी पर जा विराजते और छः बजे तक परम-प्रभाव-उत्पादक उपदेश देते रहते। छः से आठ बजे तक शङ्कासमाधान में लोगों के भ्रम मिटाते। फिर नौ बजे तक वैसे ही वार्तालाप में जनता का हित-साधन करते। इसके उपरान्त प्रभु औटाया हुआ सेर भर दूध मिश्री मिलाकर पीते थे।

आम्रफल उनका चित-चाहता भोजन था। थोड़े से आम वे अवश्य चूसते थे। पास बैठे सत्सङ्गियों में भी, बड़ी वस्तलता से, आम के फलों का प्रसाद बाँटा करते। यही समय उनका समाचारपत्र सुनने का था। जब दस बजते तो तत्काल शुभासन पर लेट जाते। कभी-कभी महाराजा महाशय सात बजे श्रीसेवा में आते और वार्त्तालाप में जब दस बजने लगते तो भगवान् कह देते कि राजन् ! अब शयन का समय हो गया है। शेष वार्त्तालाप कल किया जायेगा। महाराज का जीवन सुनियमता के ढांचे में ऐसा ढला हुआ था कि उसका दूसरा उदाहरण मिलना अति दुर्लभ है। वे प्रत्येक कार्य में आदर्श स्वरूप थे।

पूज्यपाद परमहंस जी सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते। किसी का धार्मिक विचार चाहे जो हो परन्तु उनके शिष्टाचार में अपने पराये सभी समान थे। उन का हृदय पद्मकमल की पंखुड़ियों सा कोमल था, मन मोम रामान नर्म था, बर्ताव मृणाल समान मृदु था। और कथनोपकथन तो मधुमयी मिठास का भी तिरस्कार करता था।

उनका हृदय संकुचित नहीं था। उनके विचारों में सङ्कीर्णता का लवलेश भी नहीं दिखाई देता था। किसी दीन दुःखिया को देखकर उनके भीतर दया का प्रवाह बहने लगता था। किसी का आर्त्तनाद और करुण-क्रन्दन कर्ण-गोचर करने पर उनमें सहानुभूति का सागर उमड़ आता। वे तत्काल पिघल जाते, आँखें भर लाते और उसकी विपत्ति को, बाधा को, वेदना को, दूर करने में भरसक प्रयत्न करते।

महाराज का आर्य सामाजिकों से कल्पनातीत प्रेम था। उन्होंने इस वाटिका को अपने हाथों से लगाया। इसमें से घास फूस और झाड़-झंखाड़ उखाड़ फेंकने में वे बड़ी दौड़धूप करते रहे। उन्होंने इस परम और चरम कर्म में रात दिन कुछ भी नहीं गिना। लहू पसीना एक कर दिया। किसी विनीत आर्य समाजी को अपने सामने नत-शिर देखकर उनकी छाती उतनी ही ठण्डी होती थी, उनका हृदय उतना ही वात्सल्य-भाव से भर जाता था और उनके नेत्रों में उतना ही प्रेम पूर प्रकट हो आता था। जितना एक प्रेम के पुञ्ज पिता को, प्रीति के पुतले और सुपात्र औरस पुत्र में आता है।

महाराज अपनी मानस सन्तान से क्या आशा रखते थे उसका प्रकाश इस बात से होता है। एक दिन राव राजा ज्वानसिंह जी ने नम्र निवेदन किया-''प्रभो ! आप कोई सुयोग्य शिष्य तो बनाइए, जिसमें आपके उद्देश्यों की लड़ी बीच में कही टूटने न पाये।''

भगवान् ने भक्त को कहा, ''शिष्यों से मुझे कोई आशा नहीं है। ऐसा एक भी सुपात्र और सुयोग्य शिष्य मुझे नहीं मिल सका, जिसके हाथ में अपने कार्य की बागडोर सौंप सकूं। अब तो मेरे शिष्य सभी आर्य सामाजिक हैं। वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथों की सफलता अवलम्बित है।''

महाराज की शारीरिक अवस्था अधिक कार्य करने पर भी अत्युत्तम थी। उनके तन पर वार्द्धिकता का कोई चिन्ह नहीं दीख पड़ता था। सत्संगी जन प्रायः यह कहा करते कि सौ वर्ष से पूर्व इनकी दैवी देह पर जरा का आक्रमण कदापि न होगा। कहीं भी कोई झुर्री दिखाई न देगी। इनके तन का थकना ढीला हो जाना और थलथलाने लगना एक शताब्दी के भीतर तो असम्भव है। महाराज स्वयं भी कहा करते कि हमारा देहपात यदि विष-प्रयोग अथवा शस्त्रसंयोग से न हुआ तो यह देह मानुषी जीवन-काल की परमावधि तक कार्य करने में समर्थ बनी रहेगी और मुरझाने तथा कुम्हलाने नहीं पायेगी।

राव राजा तेजसिंह जी आदि भक्त जन, कभी पांव दबाने के बहाने से, महाराज की पिण्डली में बलपूर्वक अपनी अंगुलियां धंसाते तो वे कुछ भी न धंसने पातीं। उनको महाराज के सारे अङ्ग वज्र समान बलिष्ठ और परिपुष्ट प्रतीत होते। अस्थियों में माँस का ढलकना तो दूर यदि कभी कोई सेवा करते-करते माँस को मुट्ठी में लेने लगता तो हड्डी माँस और त्वचा एकात्म हुए जान पड़ते। उनकी देह वज्रसङ्गठित थी और वज्रसमान सुदृढ़ थी। उनकी काया का कल्पतरु सांसारिक कलह-कल्पना के कलुष कीचड़ से ऊपर था। लोक की कल्याण-कामना से परिपूर्ण था। परार्थ और परमात्मा की प्रजा के पालनार्थ उसकी रचना हुई थी। पाँव के अंगूठे से लेकर शिखा स्थान तक उसमें पर-हित और पर-प्रेम भरपूर हो रहा था। महाराज तन, मन, धन-सहित मनसा, वाचा, कर्मणा परोपकार में समर्पित थे। परन्तु द्रोह, धोखे और धड़ा-बन्दी के भार से लदी हुई इस धरणी पर, लोग धर्म की आड़ में रात दिन धड़ाधड़ महा अधर्म कमाते हैं। किसी-किसी समय वे अपनों पर ऐसे घोर अत्याचार कर बैठते हैं कि जिनके स्मरण से रोम राजी खड़ी हो जाती है; कलेजा कांप उठता है।

महाराज के दर्शनों के लिये, महाराजा श्री यशवन्तसिंह जी तीन बार उनके आसन पर आये और तीन बार ही श्री चरणों को अपने आवास में आमन्त्रित किया।

एक दिन श्री महाराज जब जोधपुराधीश को दर्शन देने गये तो उस समय वहाँ वाराङ्गना 'नन्ही जान' आई हुई थी। उनको आते देखकर महाराजा महाशय ने उसकी पालकी को उठवाने का संङ्केत किया। नन्हीं जान का बहुत कुछ मान था। सभी नौकर चाकर उससे काँपते थे। यहाँ तक कि अधिकारियों को भी उसे प्रसन्न रखने की आवश्यकता होती थी।

वह वाराङ्गना तो वहाँ से चली गई, परन्तु उस दृश्य को

देखकर भगवान् दयानन्द का हृदय अतीव दु:खित हुआ।

वेश्या-प्रेम के घोर घृणित कुव्यसन का वे वैसें ही कड़ा खण्डन किया करते थे। सैंकड़ों पुरूषों का, उन्होंने इस पाप-पङ्क और दुर्व्यसन की दलदल में से, उद्धार किया था। महाराजा महाशय को भी वे धर्मावेश में आकर कहने लगे-'राजन्! राजा लोग सिंह समान समझे जाते हैं। स्थान, स्थान पर भटकने वाली वेश्या कुतिया के सदृश हैं। वीरशार्दूल का कृष्णा कुतिया पर प्रेम करना और आसक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है। आर्य जाति की कुल-मर्यादा के विपरीत है। केसरी की कन्दरा में, ऐसी कल्मष कलुषित कुक्कुरी के आगमन का क्या काम है ? इस कुव्यसन के कारण धर्म-कर्म भ्रष्ट हो जाता है। मान-मर्यादा को बट्टा लगता है। इस पापसोपान पर प्रथम, पदार्पण करते ही, पुन: पद पद पर पुरुष का अध: पतन, आप ही आप होता चला जाता है। इस दुर्व्यसन को तिलाञ्जलि देनी चाहिए।

उपदेश देने के अनन्तर महाराज अपने आसन पर चले आये। प्रेमी पुरुषों से कथनोपकथन करते उन्होंने कई बार कहा कि हमारे देश के बड़े-बड़े मनुष्यों के आचार-विचार तो इतने बिगड़ गये हैं कि इनका सर्वनाश कभी का हो चुका होता, इनकी नौका मंझधार में डूब गई होती, परन्तु इनकी पत्नियों का पतिव्रत धर्म ही इन्हें अभी तक बचाए हुए है। कुलवन्तियाँ आर्य सतियाँ ही अपने धर्म से इनकी रक्षा कर रही हैं।

नन्हीं जान इस बात को जानती थी कि महाराज के उपदेश वेश्या-व्यसन के विरुद्ध मोहिनी मंत्र का प्रभाव रखते हैं। बरसों के महाव्यसनी भी उनके श्रवण-मात्र से सुधर जाते हैं। उसे इस बात का भी पता लग गया कि स्वामीजी ने उसकी तुलना कुतिया के साथ की है। इन दोनों बातों से उसके कलेजे पर सांप लोटने लगे। वह विकट वर की विषम ज्वाला से रात दिन सन्तप्त रहने लगी।

इसी बीच में भगवान् ने महाराजा प्रताप सिंह जी को यह पत्र लिखा-

श्रीयुत मान्यवर शूरवीर महाराजा श्री प्रतापसिंह जी ! आनन्दित रहो।

यह पत्र बाबा महाशय के दृष्टिगोचर भी करा दीजियेगा।

मुझे इस बात का बहुत शोक होता है कि श्रीमान् जोधपुराधीश आलस्य आदि में वर्तमान हैं और आप तथा बाबा महाशय रोगी शरीर वाले हैं। इस राज्य में सोलह लाख से अधिक मनुष्य बसते हैं। उनके रक्षण और कल्याण का बड़ा भार आप लोग उठा रहे हैं। उनका सुधार बिगाड़ भी आप तीन महाशयों पर ही निर्भर है। तथापि आप लोग अपने शरीर की रोग से रक्षा करने और आयु बढ़ाने के काम पर बहुत अल्प ध्यान देते हैं। यह बात कितनी बड़ी शोचनीय है।

मैं चाहता हूं कि आप लोग अपनी दिनचर्या मुझसे सुधार लें, जिससे मारवाड़ तो क्या अपने आर्यावर्त्त देशभर का कल्याण करने में आप लोग प्रसिद्ध हो जाएं। आप जैसे योग्य पुरुष जगत् में बहुत थोड़े जन्मते है और जन्म कर भी बहुत स्वल्प आयु भोगते हैं।

इसके हुए बिना देश का सुधार कभी नहीं होता। आप जैसे पुरुष जितना अधिक जियें उतनी ही अधिक देशोन्नति होती है, इस पर आप लोगों को ध्यान अवश्य देना चाहिए। आगे जैसी आप लोगों की इच्छा हो। आ० वदी तृतीया १९४० हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती।

महाराज का ऊपर का पत्र राठौर-वंश की हितेच्छा से कितना पूर्ण है, यह उसके एक-एक पद से प्रकाशित हो रहा है। परन्तु जो वस्तु एक के लिए अमृत होती है वही दूसरे के लिए विष बन जाती है। नन्ही जान को यह पत्र ठीक काल के सदृश दीख पड़ा। महाराज के उत्तमोपदेश से उसके हृदय में जो गहरा घाव उत्पन्न हो गया था उस पर इस पत्र ने लवण का काम किया। उधर उसे दिनोंदिन यह दीखने लगा कि वह महाराजा के जी से उतरी और आँखों से गिरी चली जा रही है। वह दिन दूर नहीं, जब वह म्लान कुसुम माला की भाँति परित्यक्ता हो जायगी। उसकी चिन्ता की प्रचण्ड पवन ने वैर-दावानल को द्विगुण चतुर्गुण भड़का दिया।

नन्हीं जान, सताये हुये फण्यिर साँप की भाँति, बल खाती थी। लम्बे सांस लेती थी; प्रतिकार, प्रतिबन्ध और प्रतिरोध के उपाय सोचती थी। उसको निश्चय हो गया था कि स्वामीजी ही उसके रङ्ग को भङ्ग करने वाले हैं, मिले सुर की तन्त्री को तोड़ने वाले हैं। उन्हीं के वचन उसके क्षीर-नीर प्रेम में काँडी का बिन्दु बनकर गिरे हैं। इसलिए वह अन्याय से, अनीति से, निष्ठुरता से और अनर्थ से महाराज का अनिष्ट करने पर पूरी तुल गई।

नागिन की भाँति, वैर विष से व्याकुल, उस वाराँगना के साथ वे लोग भी क्रियात्मक सहानुभूति करने के लिए समुद्यत हो गए, जिन्होंने कभी मत-भेद से स्वामीजी की बातों को बुरा मनाया था जो कभी झट से उड़ जाने वाली वस्तु की भाँति उनके व्याख्यानों में भड़क उठे थे। स्वामीजी को सांझा शत्रु समझकर कुटिल नीति के गुप्त सूत्रपात होने लगे।

जब कोई विषम विपत्ति आने लगती है तो बयार पहले ही विपरीत बहने लग जाती है। महाराज का सेवक कल्लू कहार अति प्रीति से उनकी सेवा किया करता था। परन्तु जोधपुर-निवास के पञ्चम मास में वह कहार छ: सात सौ का द्रव्य लेकर चुपके से चम्पत हो गया। द्रव्य बटोरकर वह जिस खिड़की के द्वार से बाहर निकला उसके आगे ब्रह्मचारी रामानन्दजी को सोने की आज्ञा हुई थी, परन्तु उस रात वे वहाँ नहीं सो सके।

प्रभात होते ही कहार के चौर्य-कर्म का कोलाहल मच गया। राजाज्ञा हुई कि उसे पाताल से भी ढूंढ निकालना चाहिये। परन्तु अत्याश्चर्य की बात यह हुई कि वह विदेशी कहार मक्खन में से बाल की भाँति निकल गया। वह मारवाड़ के दुर्गम और विषय मार्गों से सर्वथा अपरिचित था, परन्तु पकड़ाई में नहीं आया !

thearyasamaj.org

इतना पूर्ण प्रबन्ध होने पर भी चोर का कपूर की तरह उड़ जाना स्वामीजी के हृदय में सन्देह की रेखा को प्रकट करता था। उधर पहरे वाले नौकर भी अपने कर्तव्य कर्म से अन्यमनस्क हो रहे थे।

नन्ही जान ने अपना बदला लेने और कलेजा ठण्डा करने के लिए ईश्वर जाने क्या-क्या क्रूर कर्म करने निर्धारित किये होंगे। वह अपने हृदय के फफोले फोड़ने के लिए न जाने कैसा पाप पाश लगा रही होगी। अपने मान भङ्ग से उसने जो कुछ भी किया हो सो सम्भव है। परन्तु जब तक अपना न फूटे, पराया अत्याचार करके कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। अपने ही दीपक से भवन भस्म होते हैं। अपने ही भीतर की आग दावानल बनकर विस्तृत वनों को दग्ध कर देती है। द्रोह, दम्भ और लालच-वश, अपनायतों ने संसार में अपनों के सिर पर घोर से घोर और घृणित अनर्थ ढाये हैं। भारत भूमि में तो ऐसे सहस्त्रों दृष्टान्त मिलते हैं, जिसमें दिनोंदिन बढ़ते द्रोह से, नीचता से, दुष्टता से, प्रलोभनवश और विश्वासघात से अनेक कुलकलङ्की कपूतों ने, अनेक क्रूरतम कर्मों से, अपने ही कुलों की कीर्ति को अत्यन्त काली कलूटी बनाया है।

ऐसे ही विशुद्धवंश-विदूषक अधम नर स्वामीजी के पास भी बसते थे। महाराज का स्वास्थ्य दो चार दिन से कुछ शिथिल था। आश्विन बदी चतुर्दशी सम्वत् १९४० को रात्रि समय महाराज ने अपने रसोइए से दूध लेकर पान किया और फिर सो गये। थोड़ी ही देर तक आँख लगने पाई थी कि उदर-वेदना की खलबली ने उनको जगा दिया। उसी विकट व्याकुलता में उन्होंने तीन बार वमन की। आप ही जलादि लेकर कुल्ले करते रहे। पास सोये सेवकों को जगाकर कष्ट नहीं दिया।

भगवान्, प्रतिप्रात: भ्रमणार्थ बाहर जाया करते थे, परन्तु आश्विन अमावस्या को वे चारपाई से बड़े दिन चढ़े उठे। उठते ही उन्हें एक और उलटी आई। इस वमन से उनको कुछ सन्देह सा हुआ, इसलिए कुछ जलपान करके उन्होंने दूसरी उलटी आप कर डाली। वे अपने कर्म-चारियों को कहने लगे कि आज हमारा दिल कच्चा हो रहा है। उदर में गड़बड़ हो रही है। अग्नि जलाकर आप लोग हवन कीजिए, जिससे बङ्गले के भीतर की वायु शुद्ध हो जाय। उनकी आज्ञा का पालन तुरन्त हो गया। इसके अनन्तर उनके उदर में शूलवेदना उत्पन्न हो गई। उसको उपशम करने के लिए उन्होंने अजवायन आदि वस्तुओं का काढ़ा लिया। इससे वेदना तो शान्त न हुई, किन्तु साध ही अतिसार होने लग गये।

लोगों ने डाक्टर सूर्यमल जी को बुलाया। उन्होंने उलटी बन्द करने की औषधि देकर श्री महाराज से पूछा कि आपका स्वास्थ्य अब कैसा है ? उन्होंने कहा कि पेट में प्रबल पीड़ा हो रही है, मुंह भी सूख रहा है। तत्पश्चात् डाक्टर महाशय ने प्यास के रोकने का भी औषध दिया। महाराज के उदर में ऐसा तीव्र, ऐसा विषम और ऐसा भीषण शूल उठता था कि यदि कोई दूसरा मनुष्य होता तो छटपटाकर प्राणान्त को पहुंच जाता। वे धैर्य से असह्य दारुण वेदना सहन कर रहे थे। हाय हूं आदि से घबराहट का कोई चिन्ह तक प्रकाशित नहीं करते थे। अन्त में वे स्वयं यह प्रतीत करने लग गये कि हलाहल विषमविष उनके तन की नस नस, नाड़ी नाड़ी और एकएक रक्त बिन्दु में प्रवेश करके जीवन-शक्ति को शोषण कर रहा है। उनकी सारी देह में दाह लगी हुई थी। रह रहकर भयङ्कर शूल उठता था। श्वास-प्रश्वास का वेग अति तीव्रता से बढ़ता चला जाता था। परन्तु स्वामी जी महाराज थे कि उनके मुखमण्डल पर व्याकुलता का कोई चिन्ह चक्र तक न दिखाई देता था। वे घबराहट का नाम तक नहीं लेते थे। प्रशान्त चित्त से कालकूट के उत्कृष्ट को सहन करते हुए परमात्मा-देव के भजन तथा ध्यान में निमग्न थे।

सायंकाल के चार बजे महाराज की रुग्णावस्था का समाचार महाराजा प्रतापसिंह जी को मिला। उन्होंने तत्काल डाक्टर अलीमर्दान खाँ को औषधोपचार के लिए नियत करके उनके पास भेज दिया। डाक्टर महाशय ने आकर उनकी पीठ पर पट्टी बंधवाई और कुछ औषधि भी दी। परन्तु शान्त होने के स्थान इस नये औषध से रोग ने महा भयङ्कर रूप धारण कर लिया। तीस चालीस अतिसार हुए। शूल भी पहले से बढ़ता ही चला गया।

अगले दिन डाक्टर महाशय ने आकर ग्लास लगाये। उनसे खाँसी के साथ जो पीड़ा उठती थी वह तो शान्त हो गई, परन्तु शूल ज्यों का त्यों ही बना रहा। आश्विन शुक्ला १ को प्रात:काल ८ बजे जब डाक्टर महाशय आये तो महाराज ने कहा कि हम विरेचक औषधि लिया चाहते हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि यह तो ठीक है, परन्तु पहले कोई ऐसी औषधि लेनी चाहिए जिससे कफ फूल जाय और छः सात विरेचन हों। महाराज ने कहा कि व्याधि का विनाश होना चाहिए, औषधि चाहे जो हो।

उस दिन डाक्टर जी चले गये और उन्होंने घर से गोलियां बनाकर भेज दीं। महाराज ने उनके कथनानुसार उनका सेवन किया। आश्विन शुक्ला २ को विरेचक औषध दिया गया। दस बजे से विरेचन होने आरम्भ हुए। रात्रि भर में कोई तीस से भी अधिक विरेचन हो गये। आगामी दिन सवेरे, जब डाक्टर महाशय आये तो महाराज ने उनको कहा कि आप तो कहते थे कि छः सात विरेचन होंगे। यहां तो तीस से भी अधिक हो चुके हैं ! अब तो हमारा जी मिचलाता है और बार-बार डूबता जाता है।

विरेचक औषधि से जो विचेरन हुए वे बहुत ही भयङ्कर सिद्ध हुए। उनके साथ शरीर पर अचेतना छा जाती थी। अली मर्दान खाँ की औषधि उलटा ही काम करती गई। उससे अतिसार रोग बढ़ गया। तीस पैंतीस अतिसार प्रतिदिन आने लगे। आठ नौ दिन ही में भगवान् की पाँच भौतिक देह क्षीण और दुर्बल हो गई। उस वज्रमयी काया को, किसी कुटिलता के काल कीट ने भीतर प्रविष्ट होकर, घुने हुए दाने की भांति खोखला कर दिया। उस लोह-सदृश शरीर को औषधोपचार ने शीघ्रता से जीर्ण-शीर्ण होने में

thearyasamaj.org

बड़ी भारी सहायता दी। विष-ज्वाला पर जो वस्तु पानी कहकर डाली जाती थी कोई कह नहीं सकता, वह क्योंकर तेल का काम करती थी।

स्वामीजी महाराज आदर्श संन्यासी थे। किसी के लिए भी मन में अनिष्ट चिन्तन करना उनके कर्त्तव्य कर्म के प्रतिकूल था। वे यह भी नहीं चाहते थे कि आगमापायी शरीर किसी की अपकीर्ति का कारण बन जाये। इसलिए मन से जानते हुए भी उन्होने मुखसे किसी विश्वस्त को भी नहीं कहा कि हमारी काया पर कालकूट विष का प्रयोग हुआ है।

इस भवार्णव में भौतिक शरीर का भव धारण करके कौन है जो भवितव्यता के भीषण प्रभाव से बच सका हो। होनहार के आगे सभी ऋषि महर्षि हार मान रहे हैं। अपनी भाग्य-भूमि में जिसने रोग-भोग के जैसे भी पेड़ लगाए हों उनके फल भोगने पर ही उसका छुटकारा होता है। भगवान् दयानन्द के सदृश महापुरुष, अपनी भावी का प्रत्यक्ष प्रभाव देखकर उसके लिए एक साधन बन जाने वाले जन पर कोप कदापि नहीं किया करते। उनकी दृष्टि में ठोकर गिरने से भूमि को पीटने लग जाना बाल-काल की लीला है। जो कुछ होता है वह तो अपने किये कर्म का परिणाम-मात्र है। बीच में तो मनुष्य बहाना बन गया है, उसको वध बन्धन में डालकर, घेरने घोटने में सन्त जन कोई लाभ नहीं समझते ऐसे बड़े ब्रह्मज्ञानियों का बड़प्पन और भगवद्भक्तों का भषण क्षमा कर देना-अपने प्राणों के प्यासे पुरुष को भी क्षमा-दान देना है।

महाराज के कर्मचारियों में कोई जन कपट कौशल की चाल चलता और उन्हें पीछे पता तक न लगता यह बात सर्वथा असम्भव है। मनोगत भावों को भी परिलक्षित कर लेने वाली आर्य आँख से भला कोई अपना काला मुंह कैसे छिपा सकता था ! सच बात तो यह है कि श्रीमद्दयानन्द के दयामय हृदय ने जान बूझकर, अपने प्राणों के अपराधी को अपने परम प्रेमियों-राठौर-वंशियों के हाथ समर्पण करना स्वीकार नहीं किया। उनके मन ने नहीं माना कि हत्यारे को अपने भक्त महाराजों के सामने कर, उसे कठोर दण्ड से दण्डित करायें।

राजकोट से एक महाशय ने सद्धर्म प्रचारक समाचार-पत्र को जो सूचना दी थी। उसके आधार पर बलपूर्वक कहा जा सकता है कि प्रभु दयानन्द दण्डी की दया अद्वितीय थी। उसका दूसरा दृष्टान्त दुर्लभ है। उस पत्र में छपा था कि एक जगन्नाथ नाम ब्राह्मण-वंशीय मनुष्य महाराज के पास चिरकाल से रहता था। वे उसे विश्वास-पात्र समझते थे। वह पाकशाला में पाचन की क्रिया भी किया करता था। जगन्नाथ, न जाने किसके बहकाने से, उलटी पुलटी पट्टी पढ़ाने से, चकमा दिखाने से, अथवा किसी प्रलोभन-वश महापातक के पाप-पङ्क में सहसा कूद पड़ा। अनीति, अन्याय और नीचता से घोर-घृणित अनर्थ कर बैठा। गुरुद्रोह और ब्रह्म-हत्या का अपराधी बन गया। हाय, आश्चर्य है ऐसे क्रूरतम कर्म का साहस करते समय उसकी छाती न फटी ! उसका कलेजा टूक-टूक क्यों न हो गया।

परम पवित्र परमहंस जी ने अपने तन-पिंजर को जर्जरीभूत करने वाले और प्राण-पंखेरुओं के बधिक जगन्नाथ को पकड़ लिया। जगन्नाथ ने अपने अधमतम अपराध को मान भी लिया। परन्तु कर्म-गति और फल-भोग के विश्वासी महर्षि ने ताड़ता-तजना तो कहाँ उसे तू तक नहीं कहा ! वे गम्भीर भाव से दया दर्शाते बोले-''जगन्नाथ. मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह गया। आप नहीं जानते कि इससे लोक हित की कितनी भारी हानि हुई है। अच्छा, विधाता के विधान में ऐसा ही होना था। इसमें आपका भी क्या दोष है। जगन्नाथ लो ये कुछ रुपये हैं, मैं आपको देता हूं। आपके काम आएंगे। परन्तु जैसे भी हो राठौर-राज्य की सीमा से पार हो जाओ। नेपाल राज्य में जा छिपने से ही आपके प्राणों का परित्राण हो सकता है। यदि यहां के नरेश को घुणाक्षर न्याय से भी इस बात का पता लग गया तो वे आपका बिन्दु विसर्ग तक विनष्ट करके ही विश्राम लेगें। उनके प्रकोप के उत्ताप से आपका परित्राण कोई भी न कर सकेगा। जगन्नाथ अब देर न करो। जाओ चुपचाप भाग जाओ। देखना किसी को स्थाली पुलाक न्याय से भी आपका कर्म ज्ञात न हो जाय। मेरी ओर से सर्वथा निश्चिन्त रहना। इस हृदय सागर से आपका, यह भेद किसी प्रकार कभी भी प्रकाशित न होगा।''

भगवान् ने अपने जीवन की ज्योति को बुझाने वाले जगन्नाथ को पकड़ा, उससे सब कुछ मनवाकर उसे मार्ग-व्यय के लिए, रुपये दिये और अन्त में बाल-बाल बचाकर वहां से ऐसे निकाल दिया कि उसके प्रेमीजन भी कुछ भी कल्पना तक नहीं कर सके। उसके कर्मचारियों को इसमें कुछ भी सन्देह नहीं हुआ। इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि उन्होंने विष प्रयोग का कभी नाम तक नहीं लिया। जगन्नाथ ने भेष बदलकर पन्द्रह बरस नेपाल में काटे।

महाराज के चरण-चिन्हों का अवलोकन करके, उनकी परम पावन पदपंक्तियों की यात्रा के भाव से गङ्गा-कूल पर फिरते समय हमने भी यह सुना था कि राजघाट में सम्वत् १९७० तक एक जगन्नाथ नाम ब्राह्मण प्राय: आकर वास किया करता था। वह साधुओं के वेश में रहता था। पगला सा प्रतीत होता था। वह जोधपुर में महाराज के संङ्ग था। कुछ एक साधु जनों में यह भेद खुल भी गया था कि उसकी उन्मत्तता कृत्रिम थी। वास्तव में वह ब्रह्मघातक था।

भगवान् श्री कृष्णचन्द्र ने भी, अपने पांव के तलुवे में तीर मारने वाले को क्षमा दान दे कर, पास से खिसका दिया था। परन्तु उसके और जगन्नाथ के कर्म में रात दिन और भूतलाकाश का अन्तर है। उसने, श्री कृष्ण के पाँव के चमकते चक्र को, मृग की आँख समझ कर आबिद्ध किया था, परन्तु जगन्नाथ तो सोच-

thearyasamaj.org

विचारपूर्वक, किसी षड्यन्त्र के चंगुल में फंस कर उस महाहत्या का भागी बना। इसलिए धन्य धारणा स्वामी जी महाराज की है जिन्होंने ऐसे विषम विषैले विषधर को भी क्षमा प्रदान कर दी, और प्रेरणा करके, उसे पाथेय-सहित अपने प्राण परित्राण के उपाय में भी प्रवृत्त कर दिया।

महर्षि की वेदना-व्याधि का समाचार, आर्य सामाजिक जगत् को, आश्विन शुक्ला एकादशी को मिला। अजमेर आर्य समाज के एक सभासद ने राजपूताना गज़ट में पढ़ा कि जोधपुर में भगवान् किसी भयंकर व्याधि में ग्रस्त हो रहे हैं। इस समाचार ने उसके चित्त को चलायमान कर दिया उसने बात की बात में यह शोचनीय समाचार अजमेर के सामाजिक मण्डल में पहुंचा दिया। अजमेर समाज ने अपना एक सभासद् श्री चरणों में जोधपुर भेजा। उसने महाराज की देह दशा-देखकर निवेदन किया कि भगवान्, आपने आर्य जनता को अपनी इस दशा की सूचना तक नहीं दी। महाराज ने कहा-'सौम्य, रोग का होना तो दैहिक धर्म ही है। इसका समाचार देकर आप लोगों के हृदय-कमलों को प्रफुल्ल करने का कोई समाचार होता तो मैं तुरन्त आर्य जनता के कर्णगोचर कर देता।'

उस सभासद् के अजमेर लौटने पर महर्षि की वेदना-व्याधि के तार समाचार लाहौर, मुम्बई और मेरठ आदि समाजिक केन्द्रों में दौड़ने लगे। उस दिन अजमेर का तार-घर आर्यों की चित्त-चिन्ता से अत्यन्त चंचल हो रहा था। उद्वेग वेग से व्याकुल जनों के सैंकड़ों तार आ जा रहे थे। उस घर के दिवाल द्वार तक पर, एक विचित्र घबराहट छा रही थी।

कई भक्तजन तो गुरूमहाराज की व्याधि के समाचार को पाकर इतने अधीर हो गये कि अपने सभी काम-धन्धे छोड़ छोड़कर, तत्काल श्री चरणदर्शनों के लिए दौड़ पड़े।

आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को महाराज को देखने के लिए सबसे बड़ा डाक्टर आया। स्वामी जी आबू पर्वत पर जाना चाहते थे ! इसमें वह डाक्टर महाशय भी सम्मत हो गया। उस दिन सायं को श्री महाराजा यशवन्तसिंह जी अपने सरदारों सहित श्री सेवा में पधारे और महाराज की व्याधि पर अति चिन्तित हुए। उन्होंने ढाई सहस्त्र रुपया श्री चरणों में भेंट किया।

आश्विन पूर्णिमा को महाराज के आबू जाने की सब सामग्री उपस्थित हो गई। दिन के तीसरे पहर श्रीमन्महाराजा यशवन्तसिंह जी तथा महाराजा श्री प्रतापसिंह जी स्वामी जी को विदा करने के लिए आये। महाराज उस समय पलंग पर पड़े हुए थे। उनके पास ही कुर्सी पर श्रीमन्महाराजा महाशय बैठ गये। महाराज, नरेशों से हर्ष-पूर्वक वार्त्तालाप करते रहे।

अश्वारोही सैनिक और रथादि सब आ गये। महाराज के लिए एक विशेष पालकी आई। उसमें खस की टट्टियां लगी हुई थीं। एक पंखा भी था, सोलह कहार पालकी को उठाने के लिए थे। एक नौकर इस कार्य पर नियत हुआ कि मार्ग में उस पंखे को खींचता चले। भगवान् बंगले की छत पर निवास करते थे। प्रेमीजन उनको हाथों पर उठाकर धीरे-धीरे नीचे ले आए। जब वे महाराज की अतिकृश काया को पालकी में रखने लगे तो श्रीमन्महाराजा यशवन्त सिंह जी ने भी दोनों हाथों से सहायता देकर, अपने आर्योचित आचार और प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। महाराजा महाशय ने भक्ति-भाव के साथ अपने बांधने की फलालेन की विशेष पेटी, भगवान् की कमर के साथ अपने कोमल हाथों से बाँध दी। इससे यात्रा में कष्ट बहुत थोड़ा होता है। भगवान् की पालकी के साथ-साथ पैदल चलते हुए वे उद्यान द्वार तक आये। वहाँ पालकी ठहर गई। उस समय श्री मन्महाराजा यशवन्त सिंह जी ने श्रीमहाराजा प्रतापसिंह सहित श्रीचरणों को छूकर नम्र नमस्कार की। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर प्रार्थना की, भगवन् आप ऐसी दशा में यहां से जा रहे हैं इसका मुझे अतीव दु:ख है। आपकी काया के इस उत्कृष्ट कष्ट कलेश को मैं अपने ऊपर, एक प्रकार का कलंक ही मानता हूं। यदि पूज्यपाद, पूर्ण आरोग्य प्राप्त करने के उपरान्त यहाँ से प्रस्थान करते तो मुझे अपार प्रसन्नता उपलब्ध होती। शोक ! मेरे मन् के मनोरथ मन ही मन में रह गये। यह शब्द कहते-कहते उनका जी भी भर आया। भगवान् ने अपने प्रेमी महाराज को आश्वासन देते हुए कहा, कि राजन् कोई चिन्ता न कीजिए। ईश्वर के ज्ञान में जो कुछ होना नियत है, उस ललाट लेख में मीन-मेख करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। रोग तो देह के साथ धूप और छाया की भाँति लगे ही रहते हैं। इस सप्त धातुमय भौतिक भवन में विकार का उत्पन्न हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आप शोक न कीजिए। मैं आप लोगों के प्रेम-सत्कार से अतीव प्रसन्न हूं। मुझे आप अपना पूर्ण हितेच्छु जानिए।

अन्त में फिर श्रीमन्महाराज ने श्री स्वामीजी को नमस्कार की और उदासीनता से वहाँ से राजभवन को लौटे। दूसरे भी अनेक सज्जन उस समय वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने भी श्री चरणों को स्पर्श करके अपने अहोभाग्य समझे। राजाज्ञा से डाक्टर सूर्यमल महाराज के साथ ही गये। आबू पर्वत पर भी, जोधपुर के राजनिवास के अध्यक्ष को स्वामीजी के वहां जाने की सूचना तार-द्वारा कर दी गई।

पाँचवां सर्ग

महाराज सायंकाल वहाँ से चले। सारी रात चलकर सवेरे रोपट पहुंचे। वहाँ आठ पहर तक निवास किया। उसके अगले दिन पाली में आ गये। वहां रात्रि-निवास किया और फिर रेलवे में बैठकर खारची में जा उतरे। वहाँ कुछ दिन विश्राम लेकर फिर रेलवे में बैठ गये और कार्त्तिक कृष्णा ६ सम्वत् १९४० को प्रात: पांच बजे आबू-रोड़ नाम के स्टेशन पर जा पहुंचे।

thearyasamaj.org

भगवान् की पालकी जिस समय आबू पर्वत पर धीरे-धीरे आरोहण कर रही थी तो मार्ग ही में पंजाब प्रान्त के अतिशय पुण्यवान् सुपुत्र, डाक्टर लक्ष्मण दास ने प्रभु के दर्शन पाये। यह भाग्यवान् भक्त जिला शाहपुर के अन्तर्गत भेरा नगर का निवासी था। अपने प्रान्त के सुलभ स्वभाव से उसने झुककर श्रीचरण वन्दना की और फिर उनकी नाड़ी को देखना आरम्भ किया। वह चतुर वैद्य भगवान् की कष्ट--कथा सुन और नाड़ी देखकर अति व्याकुल हो गया। भगवान् ने उसे इतना ही कहा कि इस समय कुछ ही कष्ट है। परन्तु उनकी दशा को देखकर भक्तराज वैद्य की दशा काँप उठी उनका चित्त चञ्चल हो उठा।

उस समय डाक्टर लक्ष्मणदास अजमेर जा रहे थे परन्तु उनका कलेजा इतना भर आया कि वे आबू मार्ग स्टेशन की ओर एक डग भी न उठा सके, और महाराज के साथ-साथ ही लौट पड़े।

महाराज को कोई पन्द्रह दिन से हिचकियों का उपद्रव सता रहा था। उनके वेग से सारी अंतड़ियाँ तनी जाती थीं। सम्पूर्ण तन में ऐंठन सी हो रही थी। उदर तो बार-बार की खींच से हाथ लगाने पर भी दुखता था। परन्तु प्रेमी लक्ष्मणदासजी की चिकित्सा से यह उपद्रव दूसरे ही दिन दूर हो गया। अतिसार भी बंद हो गये।

इतने चिर की दारुण वेदना झेलते हुए भगवान को एक ही भक्त, राजवैद्य मिला था परन्तु भक्तिव्यता ने उसे भी उनके पास से ढकेल दिया। भावी को यह नहीं भाता था कि आर्यों का सौभाग्य सूर्य, अभागे भारतभू-भाग पर कुछ काल और चमककर, उसकी निविड़-तमोराशि का सर्वनाश करे। कार्तिक कृष्णा अष्टमी को डाक्टर लक्ष्मणदास को ऊपर के अधिकारी की आज्ञा हुई कि आप तुरन्त अजमेर चले जाइए। भक्त लक्ष्मण ने अपने अधिकारी के आगे अति विनय-अनुनय की। गुरुमहाराज की शोचनीय दशा का दृश्य उपस्थित किया परन्तु उसने एक न सुनी, उनकी अति दीनता की प्रार्थना पर कर्णपात तक न किया। अन्त में भक्त लक्ष्मण ने जब देखा कि उसका अधिकारी किसी प्रकार भी मानने में नहीं आता, उसका हृदय किंचित् भी नहीं पसीजता तो उन्होंने राजनौकरी से त्याग पत्र तक दे दिया।

भक्त लक्ष्मण के अमर आत्मा तू धन्य है। तेरा परम त्याग तेरी उच्चता का परिचायक है। तूने वही काम कर दिखलाया जिसकी किसी आर्य जननी के जाये से आशा की जा सकती है। तूने अपने नाम को भक्तों की माला में एक बहुमूल्य मणि बनाकर अमर कर दिया है।

भक्त लक्ष्मण ने भक्ति-भाव से प्रेरित होकर त्याग-पत्र तो दे दिया परन्तु कर्म की गति मति से हठीला अधिकारी अधिक अकड़ गया। उसने कठोर हृदय से, निकली हुई, कड़ी आज्ञा के हाथों द्वारा भक्त लक्ष्मण को झपट कर श्री सेवा से छीन लिया। बलात्कार से, विवश करके उसे आबू पर से अजमेर को पटक दिया।

भक्त लक्ष्मण पर्वत शिखर से उत्तर तो रहा था सही परन्तु केवल कलेवर से शून्य हृदय से, जलते कलेजे से और भरे हुए जी से। उसका मन भ्रमर तो श्री चरणों के चहुं ओर चक्कर लगाकर उनकी परिक्रमा का परम पुण्य उपार्जन कर रहा था। मार्ग में आते हुए भक्त की हृदय-सतार के तार ने कई बार इस स्वर का झंकार किया-'पराधीन सपने सुख नाहीं।'

आबू से नीचे आते समय, भक्त लक्ष्मण को कई आर्य पुरुष ऊपर जाते मिले। उन्होंने भक्तराज को पहचानकर उससे भगवान् का समाचार उतनी ही आतुरता से पूछा, जितनी से पाण्डु-पुत्र ने श्री कृष्ण का ऊधव जी से पूछा था। भक्त ने अनर्गल आँसू बहाते हुए कहा, ''भगवान की अवस्था अतीव शोचनीय है। निर्बलता परले पार की बढ़ गई है। उनके कण्ठ में, जीभ पर, मुख में, माथे और सिर पर छाले पड़ गए हैं। पानी का घूंट भी बड़ी कठिनता से गले से नीचे उतरता है। इस महाघोर अन्धकार में, निपट हताशा की निशा में, उदासीनता के गहरे सागर में आशा की केवल यही एक झीनी रेखा चमकती है कि महाराज की चेतना ठीक है। उनकी आत्मा स्वस्थ है। हाय! मैं क्या करूं, पराधीन हूं, विवश हूं। ऐसे समय में अकिञ्चित्मक हो गया हूं, परन्तु पीछे महाराज के लिए औषधादि लिख आया हूं।''

भक्त लक्ष्मण ने फिर कहा, आप लोग भगवान् को किसी प्रकार अजमेर ले आयें तो बहुत ही अच्छा हो। उनको अजमेर लाने के लिए पूरा प्रयत्न कीजिएगा। इसी में अब कुछ हो सकता है। भक्तराज इतना निवेदन करके रुमाल से आंखें पोंछते हुए आबू-मार्ग स्टेशन को चले पड़े। श्री दर्शनार्थी आर्य जन आँसुओं से सड़क को सींचते हुए पर्वतारोहण करने लगे।

ठाकुर भूपाल सिंह जी स्वामीजी के साथ जोधपुर में भी थे। आपने उनकी सेवा में रात दिन कुछ नहीं देखा। यद्यपि आप जिला अलीगढ़ के भूमिहार ठाकुरों में से एक प्रतिष्ठित ठाकुर थे परन्तु उन्होंने महाराज की उलटियों को अपने हाथ से उठाकर दूर बाहर फैंका। वे महाराज का मूत्र-पुरीष तक उठाते रहे। अपनी गोद में उठाकर उनको शौच-स्थान में ले जाते। कई बार उनके हाथों पर ही अतिसार हो गए। वे उनके मलमूत्र के वस्त्रों को भी धोते। जो भी गुरु-सेवा कोई आदर्श सेवक कर सकता है वह ठाकुर महाशय ने की और रातों जागकर की।

प्रशंसित ठाकुर महाशय तो श्री सेवा में थे ही, मेरठ से महाशय लक्ष्मण स्वरूपजी, फरुखाबाद से लाला शिवदयाल और मुम्बई से सेवक लाल कृष्णदास आदि अनेक भक्तजन आबू पर आ पहुंचे।

आबू के तार-घर के कर्मचारियों को उन दिनों में आंखें झपकना भी नहीं मिलता था। पल-पल में इतने तार आते थे कि किसी को सिर खुजलाने तक का अवकाश न था। आर्यों की

thearyasamaj.org

व्यस्तता वेग के निरन्तर आने वाले तार उस तार घर को धुआँ धार कर रहे थे। सभी कर्मचारी कहते थे कि इतने तार पहले वहां कभी नहीं आये।

भगवत्पाद-पद्मों में महाराजा श्री प्रताप सिंह जी को भक्ति अपार थी। वे अनन्य मन से उनके सेवक थे। उनके आबू पर आने के दो तीन दिन पश्चात् ही वे वहाँ गये और श्रीचरण चुम्बन करके पीछे लौट आये। महाराज के निवासादि का भी वे पूरा प्रबन्ध कर गये।

स्वामीजी तो आबू पर ही रहना चाहते थे, परन्तु प्रेमीजन रात दिन प्रार्थना करते कि प्रभो, अजमेर में पधारिये। वहीं यथायोग्य रीति से औषधोपचार हो सकेगा। वहां श्री चरणों के एक निष्ठावान् सेवक डाक्टर श्री लक्ष्मणदासजी विद्यमान् हैं।

भक्तों के अत्याग्रह-वश भगवान् कार्तिक कृष्णा एकादशी को अजमेर को चल पड़े। अजमेर स्टेशन पर उस दिन आर्य पुरुषों की एक भारी भीड़ लगी हुई थी। गाड़ी आने पर, जब चार पाँच मनुष्यों ने स्वामीजी को अपने हाथों पर उठाकर नीचे उतारा तो आर्य जनों के हृदय व्याकुलता से चूर चूर हो गये। उनके लिए पहले से ही एक कोठी नियत की हुई थी। वहां ले जाकर उन्होंने महाराज की अतिकृश काया को पलंग पर लिटा दिया।

कार्तिक कृष्णा द्वादशी से फिर डाक्टर लक्ष्मणदासजी की औषधि आरम्भ हो गई। भक्त लक्ष्मणदास नियत समय पर बदल-बदल कर औषधि देते, आप भी अधिक समय वहाँ रहते परन्तु सभी प्रयत्न निष्फल जाते थे। कोई भी ओषधि लगती न थी। पल पल, घड़ी घड़ी और दिन दिन में महारोग भीषणाकार होता चला गया। इससे सबकी चित्त-भित्तियों पर निराशा और चिन्ता के चिन्ह चित्रित होते जाते थे। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को पण्डित भागरामजी श्री दर्शनों के लिए आये। महाराज ने उनको अति धीमी ध्वनि से कुशल प्रश्न किया। उन्होंने निवेदन किया कि भगवन, आपकी कृपा से मैं तो अच्छा हूं परन्तु श्री भगवान् को इस दशा में देखकर हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। भगवान्, भक्त भागराम की ओर गम्भीर भाव से देर तक देखते रहे। अन्त में पण्डितजी न्यायालय को चले गये।

उसी दिन लाहौर से लाला जीवनदास और पण्डित गुरुदत्तजी वहां पहुंचे। नम्र नमस्कार करके लालाजी पलङ्ग के पायताँने की ओर बैठ गये, महाराज ने उनको आँख खोलकर देखा। फिर उनको हाथ से पकड़ अपनी ओर खींचकर लाहौर की सामाजिक स्थिति का सुख-समाचार पूछा। उसी समय लालाजी ने पण्डित श्री गुरुदत्त का परिचय कराया। पण्डित महाशय ने, उठकर बड़ी विनीतता से, श्रीचरण छूकर नमस्कार की।

श्रीमन्महाराणा सज्जन-सिंहजी ने, उदयपुर से, पण्डया मोहनलाल जी को पूज्यपादजी का कुशल-समाचार पूछने के लिए भेजा। पण्डयाजी ने जब आकर देखा कि उनके फेफड़े काश-श्वास से धौंकनी की भाँति धौंक रहें हैं, अन्तकालीन वेदना से उनका बदन व्यथित हो गया है, उनकी परिपुष्ट काया अब अस्थि-पिंजरावशेष यष्टि बन गई है, और उनके जीवन-स्त्रोत के सामने उसे शोषण करने के लिए मृत्यु की महामरुस्थली आ पड़ी है तो वे पांव के तलुओं से सिर की चुटिया तक थरथर कांप गये। एकाएक उनका सिर चकरा गया, जी घुटने लगा और आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। अन्त में उन्होंने कलेजा थामकर चरण-वन्दना की और बताया कि श्रीमहाराणाजी आपकी व्याधि का वृत्त जानकर अति चिन्तित हो रहे हैं। वे रात दिन आपका स्वास्थ्य समाचार जानने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। महाराज आज आपकी परोपकार-मूर्ति की, यह अवस्था देखकर मैं भी अति अधीर हो रहा हूं। भगवन्, भारत भूमि के शुभ भाग्य-प्रभात को आहूत करने के लिए, आप ऐसे भारत-भक्तों को, अभी बड़ी भारी आवश्यकता है। ये हमारे, हमारी जाति के और हमारे देश के दुर्दिन हैं जो आपकी दया पूर्ण देह इस दुःखद दशा में आ पड़ी है।

महाराज ने कहा, ''पण्डयाजी, खेद से खिन्न न हूजिए। अब विधाता को ऐसी ही इच्छा है। देह का बनना और बिगाड़ना तो, पानी के बुद्बुदे और सागर तरङ्ग की भांति होता ही रहता है। यह मर्त्यलोक मरणाभिमुख हैं। कोई अनहोनी होने लगे तो उसका कोई शोक भी करे, परन्तु मिलकर टूटना, बनकर बिगड़ना, होकर न रहना, जन्म कर मर जाना तो जगत का अवश्यम्भावी नियम है। इसके लिए सोचना नहीं चाहिए।''

कार्तिक कृष्णा १४ को महाराज के शरीर पर नाभि तक छाले पड़ गये थे। उनका जी घबराता था गला बैठ गया था। श्वास-प्रश्वास के वेग से उनकी नस-नस हिल जाती थी। सारी देह में दाहसी लगी हुई थी। परन्तु वे नेत्र मूंदकर ब्रह्म ध्यान में वृति चढ़ाये हुए थे। अनजान लोग उनकी इस ध्यानावस्था को मूर्छा मान लेते थे। जब शरीर अपने व्यापार से शिथिल हो जाय और बोलने आदि की शक्ति भी मन्द पड़ जाय तो सभी सन्तजन मनोवृत्तियों को मूर्छित करके निमग्नावस्था में चले जाया करते हैं।

कार्तिक अमावस्या मङ्गलवार, दीप माला के दिन, सवेरे, विदेशी बड़ा डाक्टर न्यूटन महाशय आया। उसने उनके-रोग-भोग की अवस्था देखकर आश्चर्य से कहा कि ये बड़े साहसिक और सहनशील हैं। इनकी नस नस और रोम रोम में रोग का विषैला कीड़ा घुसकर कुलबुलाहट कर रहा है परन्तु ये प्रशान्तचित्त हैं। इनके तन पिंजर को महाव्याधि की ज्वाला-जलन जलाये चली जाती है जिसे दूर से देखते ही कंपकपी छूटने लगती है। पर ये हैं कि चुपचाप चारपाई पर पड़े हैं। हिलते डुलते तक नहीं। रोग में जीते रहना इन्हीं का काम है। भक्त लक्ष्मणदास ने उनसे कहा कि महाशय ये महापुरुष स्वामी दयानन्दजी हैं।

thearyasamaj.org

यह सुनकर डाक्टर महाशय को अत्यधिक शोक हुआ। महाराज ने उस बड़े वैद्य से प्रश्नों का उत्तर संकेत-मात्र से दिया। एक मुसलमान वैद्य, पीरजी, बड़े प्रसिद्ध थे। वे भी उनको देखने आये। उन्होंने आते ही कह दिया-'इनको किसी कुलकण्टक ने कालकूट विष देकर अपनी आत्मा को कालिख लगाई है। इनकी देह पर सारे चिन्ह विष-प्रयोग-जन्य ही दिखाई देते है।' पीर जी ने भी महाराज का सहन-सामर्थ्य देख दांतों में उङ्गली दबाते हुए कहा, धैर्य का ऐसा धनी, धरणी-तल पर हमने दूसरा नहीं देखा।

इस प्रकार राजवैद्यों और भक्तजनों के आते जाते दिन के ग्यारह बजने लगे। रोगी का साँस अधिक फूलने लगा। वे हाँफते तो बहुत थे परन्तु बोलने की शक्ति कुछ लौट आई थी। उनका कण्ठ खुल गया था। इससे प्रेमियों के मुखमण्डलों पर प्रसन्नता की रेखा खेलने लगी परन्तु पीछे जाकर उन्हें पता लगा कि वह तो दीपक-निर्वाण की अन्तिम प्रदीप्ति थी। सूर्यास्त का उजेला था।

महाराज ने उस समय शौच होने की इच्छा प्रकट की। चार भक्तों ने उन्हें हाथों पर उठाकर शौच होने की चौकी पर बिठा दिया। निवृत्त होकर वे फिर भली भांति शुद्ध हुए और आसन पर विराजमान हो गये।

उस समय स्वामीजी ने कहा कि आज इच्छानुकूल भोजन बनाइए। भक्तों ने समझा कि भगवान् आज अपेक्षाकृत कुछ स्वस्थ हैं इसलिए अन्न ग्रहण करना चाहते हैं। वे थाल लगाकर श्रीमहाराज के सामने लें आये।

स्वामीजी ने टुक देखकर कहा कि अच्छा, इसे ले जाइए अन्त में प्रेमियों की प्रार्थना पर उन्होंने चनों के झोल का एक चमचा ले लिया फिर हाथ मुंह धोकर भक्तों के सहारे वे पंलग पर आ गये।

शरीर की वेदना बराबर ज्यों की त्यों बनी हुई थी। श्वास रोग का उपद्रव पूरे प्रकोप पर पहुंच चुका था। पर वे शिष्य-मण्डली से वार्तालाप करते और कहते थे कि एक मास के अनन्तर आज स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ है। बीच-बीच में जब वेदना का वेग कुछ तीव्र हो जाता तो वे आँखें बन्दकर मौन हो जाते। उस समय उनकी वृत्ति स्थूल शरीर का सम्बन्ध छोड़ देती-आत्मा-कारता को लाभ कर लेती।

इसी प्रकार पल विपलस बीतते सांझ के चार बजने को आये। भगवान् ने नाई को बुलाकर क्षौर करने को कहा। लोगों ने निवेदन किया कि भगवान् उस्तरा न फिराइए। छाले फुंसियाँ कटकर लहू बहने लगेगा, परन्तु उन्होंने कहा कि इसकी कोई चिन्ता नहीं है। क्षौर कराकर उन्होंने नख उतरवाए। फिर गीले तौलिये से सिर को पोंछकर सिरहाने के सहारे पलङ्ग पर बैठ गये।

उस समय श्रीमहाराज ने आत्मानन्द जी को प्रेम से आहूत किया। जब आत्मानन्दजी हाथ जोड़कर सामने आ खड़े हुए तो कहा-वत्स, मेरे पीछे बैठ जाओ। गुरुदेव का आदेश पाकर वे सिराहने की ओर, तकिये के पास, प्रभु की पीठ थामकर विनय से बैठ गये।

महाराज ने अतीव वत्सलता से कहा-वत्स, आत्मानन्द, आप इस समय क्या चाहते हैं ? गुरु महाराज के वचन सुनकर आत्मानन्दजी का हृदय भर आया। उनकी आँखों से एकाएक आँसुओं का लड़ी टूट पड़ी। गद्गद् गले से आत्मानन्दजी ने नम्रीभूत निवेदन किया कि यह, 'तुच्छ सेवक रात दिन यही प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपनी अपार कृपा से श्री चरणों को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे। इसे इससे बढ़कर त्रिभुवन भर में दूसरी कोई वस्तु प्रिय नहीं है।

महाराज ने हाथ बढ़ाकर आत्मानन्द जी के मस्तक पर रखा और कहा-वत्स इस नाशवान क्षणभंगुर शरीर को कितने दिन स्वस्थ रहना है ! बेटा अपने कर्तव्य कर्म को पालन करते आनन्द से रहना। घबराना नहीं। संसार में संयोग और वियोग का होना स्वाभाविक है।

महाराज के इन वचनों को सुनकर आत्मानन्द जी सिसक कर रोने लगे। गुरु वियोग-वेदना-को अति समीप खड़ा देखकर उनका जी शोक सागर के गहरे तल में डूब गया।

गोपालगिरी नाम के एक संन्यासी भी कुछ काल से श्रीचरण-शरण में वास करते थे। महाराज ने उनको आमन्त्रित करके कहा कि आपको कुछ चाहिए तो बता दीजिए। उन्होंने भी यही विनय की कि भगवन् ! हम लोग तो आपका कुशल-क्षेम ही चाहते हैं। हमें साँसारिक सुख की कोई भी वस्तु नहीं चाहिए। फिर महाराज ने दो सौ रुपये और दो दुशाले मंगाकर भीमसेनजी और आत्मानन्द जी को प्रदान किये। उन दोनों ने अश्रुधारा बहाते, भूमि पर सिर रखकर वे वस्तुयें लौटा दीं। वैद्यवर भक्तराज श्रीलक्ष्मण दासजी को भी भगवान् ने कुछ द्रव्य देना चाहा परन्तु उन्होंने द्रवीभूत हृदय से कर जोड़कर लेने से इनकार कर दिया।

इस प्रकार अपने शिष्यों से गुरु महाराज को विदा होते देखकर, आर्य जनों के चित्त की चञ्चलता और चिन्ता की प्रचण्डता चरम सीमा तक पहुंच गई। वे बड़ी व्याकुलता से सामने आ खड़े हुए। उस समय, श्री स्वामीजी, अपने दोनों नेत्रों की ज्योति सब बन्धुओं के मुखमण्डलों पर डालकर, एक नीरव पर अनिर्वचनीय स्नेह-संताप सहित, उनसे अन्तिम विदाई लेने लगे। उनके प्रेम पूर्ण नेत्र, अपने पवित्र प्रेम के सुपात्रों को धैर्य देते और ढांढस बंधाते प्रतीत होते थे। महाराज प्रसन्न-चित्त थे। उनके मुख पर घबराहट का कोई भी चिन्ह परिलक्षित नहीं होता था।

परन्तु भक्तजनों की आशायें क्षण-क्षण में निराशा निशा में लीन हो रही थीं। उनके उत्साह की कोमल कलियों के सुकोमल अङ्ग पल-पल में भङ्ग हुए चले जाते थे। वे गुरुदेव की दैवी देह

thearyasamaj.org

के देव-दुर्लभ दर्शन पा तो रहे थे परन्तु उनकी आँखों के आगे रह-रह कर आँसुओं की बदलियाँ आ जाती थीं। रुलाई का कुहरा छा जाता था। सर्वत्र निविड़ तमोराशि का राज्य दिखाई देने लगता था। वे जी को कड़ा किये कलेजा पकड़ कर खडे तो थे, परन्तु खोखले पेड़ और भुने हुए दाने की भांति, मानो सत्व रहित थे।

ऐसी दशा ही में सांयकाल के पाँच बजने लगे। उस समय एक भक्त ने पूछा कि भगवान्, आपकी प्रकृति कैसी है ? श्रीमहाराज ने उत्तर दिया कि अच्छी है; प्रकाश और अन्धकार का भाव है। इन्हीं बातों में जब साढ़े पाँच बजे तो महाराज ने सब द्वार खुलवा दिये। भक्तों को अपनी पीठ के पीछे खड़े होने का आदेश किया। फिर पूछा कि आज पक्ष, तिथि और वार कौन सा है। पण्डया मोहन लाल ने शिरोनत होकर निवेदन किया कि प्रभो, कार्तिक कृष्ण पक्ष का पर्यवसान और शुक्ल का प्रारम्भ है। अमावस्या और मङ्गलवार है।

तत्पश्चात् महाराज ने अपनी दिव्य दृष्टि को उस कोठरी के चहुं ओर घुमाया और फिर गम्भीर ध्वनि से वेद-पाठ करना आरम्भ कर दिया। उस समय उनके गले में, उनके स्वर में, उनके उच्चारण में, उनकी ध्वनि में, उनके शब्दों में किञ्चिन्मात्र भी निर्बलता प्रतीत नहीं होती थी।

भगवान् के होनहार भक्त, पण्डित श्रीगुरुदत्त जी उस कमरे के एक कोने में भित्ति के साथ लगे हुए, भगवान् की भौतिक दशा के अन्त का अवलोकन कर रहे थे। टकटकी लगाये निर्निमेष नेत्रों से उनकी ओर देख रहे थे।

पण्डित महाशय उस धर्मावतार के दर्शन करने पहले पहल ही आये थे। उनके अन्तःकरण में अभी आत्म-तत्त्व का अंकुर पूर्ण-रूप से नहीं निकल पाया था। परन्तु श्रीमहाराज की अन्तिम दशा को देखकर वे अपार आश्चर्य से चकित हो गये। वे चौकसाई विचार से देख रहे थे कि मरणासन्न महात्मा के तन पर अनगणित छाले फूट निकले हैं उनको विषम वेदना व्यथित किये जाती है। उनकी देहको दावानल सदृश दाह-ज्वाला एक प्रकार से दग्ध कर रही है। प्राणान्तराकरी पीड़ा उनके सम्मुख उपस्थित है। परन्तु महात्मा शान्त बैठे हैं दुखक्लेश का नाम-निर्देश तक नहीं करते। उलटे गम्भीर गर्जना से वेद-मन्त्र गा रहे हैं। उनका मुख प्रसन्न है। आँखें कमल सदृश खिल रही हैं उनका विमल भाल अद्भुत आभा से चन्द्रमा के सदृश चमक रहा है। व्याधि मानों उनके लिए त्रिलोकी में त्रयकाल, उत्पन्न ही नहीं हुई। यह सहनशीलता शरीर की सर्वथा नहीं है। अवश्यमेव यह इनका आत्मिक बल है।

यह पहला पल था कि जिस में महर्षि की मृत्यु की अवस्था देखकर श्रीगुरुदत्त ऐसे धुरन्धर नास्तिक के हृदय की उपजाऊ भूमि में आत्मिक जीवन की जड़ लग गई। इन भावों की विद्युत-रेखा चमकते ही वे सहसा चौंक पड़े। उन्होंने क्या देखा कि एक ओर तो परम धाम को पधारने के लिए प्रभु परम हंस पलङ्ग पर बैठे प्रार्थना कर रहे हैं और दूसरी ओर वे, व्याख्यान देने के वेश में सुसज्जित, उसी कमरे की छत के साथ लगे बैठे हैं। इस आत्म योग के प्रत्यक्ष प्रमाण को पाकर पण्डित महाशय का चित्त-स्फटिक, आस्तिक भाव की प्रभा से चमचमा उठा। मानों एक ओर से निकलती हुई ज्योति उनकी देह के दीप में प्रवेश कर गई।

गुरुदत्त अपने गुप्त रीति से आत्मदाता गुरूदेव को फिर अतिशय श्रद्धा से देखने लगे। भगवान् वेद गान के अनन्तर, परम-प्रीति से पुलकित-अंग होकर, संस्कृत शब्दों में परमात्मदेव की प्रार्थना करने लगे। फिर आर्यभाषा में ईश्वर गुण गाते भक्तों की परम गति भगवती गायत्री को जपने लगे। उस महामन्त्र के पुण्यपाठ को करते करते मौन हो गये। और चिरकाल तक सुवर्णमयी मूर्त्ति की भाँति निश्चल रूप से समाधिस्थ बैठे रहे। उस समय उनके स्वर्गीय मुख मण्डल के चारों ओर सुप्रसन्नता-प्रभात की झलमलाहट पूर्ण-रूप से झलमल कर रही थी।

समाधि की उच्चतम भूमि से उतर कर, भगवान् ने दोनों नेत्रों के पलक-कपाट खोलकर, दिव्य ज्योति का विस्तार करते हुए कहा-हे दयामय, हे सर्व शक्तिमान् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है! सचमुच, तेरी ही इच्छा है। परमात्मदेव तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! मेरे परमेश्वर, तैने अच्छी लीला की ?

इन शब्दों का उच्चारण करते ही, ब्रह्मऋषि ने आत्मिक प्राण को ब्रह्माण्ड द्वारा परम धाम को जाने के लिए स्वर्ग-सोपान पर आरूढ़ किया और तत्पश्चात् पवन रूप प्राण को कुछ पल तक भीतर रोक कर प्रणवनाद के साथ बाहर निकाल दिया। उसे सूत्रात्मा वायु में लीन कर दिया।

प्रभु के स्थूल प्राण के निकलने के साथ ही उपस्थित सेवकों की अश्रु धाराएं अनर्गल हो गईं। अनाथ बालकों की भांति, भक्तजनों ने रो रोकर कमरे की भूमि को, भिगो दिया। उनके दुःख का, उनके क्लेश का, उनकी निराशा का, उनके शोक का, कोई पारावार न रहा। सबके हृदय इस दारुण दुःख से विदीर्ण हो गये। वे बहुतेरा थामते पर उनका कलेजा बार-बार मुंह को आता था। वे धैर्य धारण करने की चेष्टा भी करते पर चित्त चकनाचूर ही हुए चला जाता था ! फूट भूटकर रोते उनकी आँखें फूल गईं। घिघियां बंध गईं। व्याकुलता वेग ने उनको शोक के अति गहरे सागर में डुबो दिया।

आर्त्त भारत के भाग्य का भानु, भगवान् दयानन्द, कार्त्तिक अमावस्या सम्वत् १९४० वैक्रमी, मंगलवार को सायं के छः बजे एकाएक, काल कराल रूप अस्ताचल की ओट में हो गया। उस समय सूर्यदेव भी अस्त हो गये थे। तमोमयी महा तमिस्त्रा रजनी ज्यों-ज्यों घोरतररूप धारण करती जाती थी त्यों-त्यों अजमेर के तार-घर से दौड़ते हुए तार आर्यसंसार में निराशा की, अति शोक

thearyasamaj.org

की और असह्य विपत्ति वज्रपात की घोरतम तमोराशि की निपट निशा का विस्तार कर रहे थे।

महाराज के निर्वाण का अचानक समाचार पाकर आर्यों के चित्त चौंक पड़े, चञ्चल हो उठे; उनके सिर पर दुःखरूप पर्वत-शिखर का सहसा विनिपात हो गया। उस समय आर्य जनों की आँखें गङ्गा-यमुना की भाँति बड़े वेग से बह रहीं थीं। उनके हृदय अस्त-व्यस्तता में व्याकुल हो रहे थे। मन गहरे खेद की खाई में गिर कर खिन्नावस्था में खण्ड-खण्ड हुए जाते थे। उनकी आत्मायें इतनी अधीर हो गई थीं कि उनको एक-एक पल द्रोपदी के चीर के समान दिखाई देता था और वह रात्रि काल-निशा सदृश जान पड़ती थी।

जिस प्रकार श्री राम के वियोग से भरत जी व्याकुल हो उठे थे और श्री कृष्ण के निर्वाण पर ऊधव जी तथा पाण्डवों ने करुण-क्रन्दन किया था। उसी प्रकार भगवान् दयानन्द के स्वर्ग सिधारने पर आर्य समाजियों में अनवरत होने लगा। उनके मध्यान्ह के सूर्य की प्रखर किरणों पर अकस्मात् काल-कालिमा छा गई। शरत्पूर्णिमा के शुभ्र ज्योत्सना-युक्त चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया पड़ गई। उनकी उन्नति और उदय के बाल रवि को राहु ने सहसा ग्रस लिया। हरित, भरित, पुष्पित और फलित आर्य समाज वाटिका पर पुरुष-पाषाण राशि को भी तुषार-रूप में परिणत करने वाला, भीषण तुषारपात हो गया। प्रसन्नता पर खिन्नता की झलक आ गई। चारु प्रेम-प्रतिमा अकाल ही में सामने से उठा ली गई। उनकी सुविमल, सुशीतल, सुवासित, सुकोमल चित्त-कलियों को काल को लू के झकोले ने जहाँ तहां से झुलस दिया। वे गुरु-वियोग व्यथा से विह्वल हो, बिलख बिलख कर रोदन करते थे।

आगामी दिन के समाचार पत्रों ने शोक-सूचक गहरी काली रेखा देकर अपने स्तम्भों से स्तम्भ इस शोक-समाचार पर लिखे, जिससे पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण पर्यन्त भारत भर में भगवान् के असामयिक स्वर्गारोहण का शोक छा गया। नगर-नगर में लोगों ने सभायें लगाकर इस अति भारी क्षति और धर्महानि पर आँसू बहाये। इस सार्वभौम शोक में अमेरिका और यूरोप के देश भी समिल्लित हुए।

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को, प्रातःकाल भक्तजन भगवान् की जीवन-ज्योति विहीन, निर्जीव देह-दीवट को उठाकर स्नान कराने लगे। वे चाहते थे कि महाराज के शरीर पर केवल सुशीतल जल ही पड़े परन्तु बलात्कार से उनके आँसू बराकर, टपटप करके टपक पड़ते थे। स्नान कराने के उपरान्त महाराज की देह को चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं से चर्चित किया गया। फिर उसे बहुमूल्य वस्त्रों में वेष्टित करके, पलंग पर प्राण-त्याग आसन में स्थापित किया गया। उस समय सैंकड़ों मनुष्य उनके अन्तिम दर्शनों को दौड़े आकर, अपने नेत्रों की सहस्त्र धाराओं से उस कोठरी की भूमि को भिगोते थे। वहां ऐसा प्रतीत होता था कि आज यहाँ शोक के सातों सागर उमड़े पड़े हैं। जिस समय महाराज की देह को उठाने के लिए भक्तजन विमान बनाने लगे तो पण्ड्या मोहन लाल जी ने भ्रातृ मण्डल के सामने निवेदन किया कि श्रीमन्महाराणा श्री सज्जन सिंह जी ने मुझे चलते समय आदेश किया था कि यदि हम लोगों के दुर्भाग्य से महाराज का शरीर छूट जाए, तो किसी प्रकार तीन चार दिन पर्यन्त उसका दाह-कर्म न किया जाय, जिससे मैं और उनके दूसरे शिष्य राजे महाराजे उनके अन्तिम दर्शन पा सकें, उनके दाह-कर्म में सम्मिलित हो सकें। परन्तु प्रभु के उपस्थित प्रेमियों ने दाह कर्म उसी दिन कर देना ही उचित समझा। शिविका पुष्पों, कदली स्तम्भों और कोमल पत्तों से सुसज्जित की गई, दिन के दस बजे महाराज की अरथी उठाई गई। उस समय सैंकड़ों सज्जन नङ्गे पाँव उनके पीछे चलते थे। राय भागराम भी नङ्गे पाँव साथ थे। महाराज के, शिविका में पड़े शव को पंजाबी सैनिक अपने बलिष्ठ कन्धों पर उठाये वहन कर रहे थे। रामानन्द जी और गोपालगिरी जी आदि आगे आगे वेद-पाठ करते चलते थे। अजमेर नगर के आगरा द्वार से होते हुए बाजारों और चौकों का उल्लंघन करते नगर से बाहर दक्षिण भाग में शिविका पहुंचाई गई।

वेदी बनने में कुछ देर जानकर पण्डित भागरामजी ने आर्यों के डाँवाडोल मनों को धैर्य बंधाते हुए स्वर्गीय स्वामीजी के गुण-कीर्तन किये। उनके उपकार बताये और स्वामीजी के उद्देश्यों की परिपूर्ति के लिए स्वामी भक्तों को प्रोत्साहन दिया। यद्यपि पण्डित महाशय का कण्ठ बीच में वाष्प से बारबार रुक जाता था, फिर भी उन्होंने यथा तथा करके अपना हार्द प्रकाशित कर ही दिया।

तत्पश्चात् रायबहादुर पण्डित सुन्दरलालजी कलेजे को कड़ा करके कथन करने लगे। परन्तु वे तो दो चार शब्दों ही में शोक-सागर में डूब गये। उनके दोनों नेत्रों से बहते हुए अश्रुओं ने उनके वक्ष-स्थल को गीला कर दिया उनका गला इतना रुक गया कि वे आगे कुछ भी न बोल सके।

वेदी बन जाने पर भक्त लोगों ने दो मन चन्दन और दस मन पीपल की समिधाओं से चिता चयन की। अपने टूक-टूक होते हृदयों को थाम कर उन्होंने गुरुदेव के शव को उस अन्तिम शय्यापर शायी कर दिया। रामानन्द और आत्मानन्दजी ने यथाविधि अग्न्याधान किया। अग्नि-स्पर्श होते ही घृतसिंचित चिता, ज्वाला-माला से आवृत हो गई। उस दाह-कुण्ड में चार मन घी, पांच सेर कपूर एक सेर केसर और दो तोले कस्तूरी डाली गई। चरु और घृत की पुष्कल आहुतियों से हुत श्री महाराज का शव प्रेमियों के नीर भरे नेत्रों से देखते ही देखते अपने कारणों में लय हो गया। महाराज की अमर आत्मा तो जागतिक ज्योति में पहिले ही लीन हो चुकी थी। सेवकों ने उनके शरीर को भी ज्योतिः शय्या पर आरूढ़ करके उसके तात्विकरूप में पहुंचा दिया।

thearyasamaj.org

गुरु महाराज की दुर्लभ देह का दाह-कर्म करने के अनन्तर, अति शोकातुर आर्यजन नगर को लौट आये। उस दिन वे अपने को निसार और निसत्व समझते थे, प्रत्येक कार्य में अनमने से हो रहे थे। अपने अति प्यारों को भी देखकर उनको प्रसन्नता नहीं होती थी। उनको अपने देह के दीवट पर धरा हुआ मन का दीवा प्रसन्नता की ज्योति से सर्वथा शून्य जान पड़ता था।

कार्तिक शुक्ला द्वितीया को पण्डया मोहनलालजी ने महाराज के स्वीकार पत्र के अनुसार उनकी सारी वस्तुओं पर अधिकार कर लिया और कागज-पत्रादि उदयपुर भेज दिये। भगवान् की अस्थियों को चयन करके, शाहपुराधीश के दिये उद्यान में गाड़ दिया गया। यह उद्यान अन्नासागर के किनारे पुष्कर की सड़क पर है।

महाराज के निर्वाण के अनन्तर, कई दिनों तक सारे भारतियों के मानस आकाश में शोक का मेघमण्डल मण्डलाता रहा। भारत-भक्तों के हृदय पर गहरी चोट आई। सुधारक दल का दाहिना हाथ गिर गया। अबलाओं के पक्ष-पोशक दीन-दुर्बलों के सहायक और अनाथों को सनाथ करने वाले मस्त योगी ने अपनी काया, कन्दरा त्याग दी, पर्ण-कुटी छोड़ दी। वह एकाएक चुपके से स्वर्गधाम को पधार गया। परन्तु उसकी फेरी का अलख नाद जनता के कानों में ज्यों का त्यों गूंजता रहा। उसकी माधुरी मूर्ति आँखों के सामने वैसी की वैसी ही फिरती रही।

कुछ काल तक तो आर्य-समाजों के साथ सबने सहानुभूति का प्रकाश किया। उनके गहरे घावपर मरहम-पट्टी की। परन्तु मत-मतान्तरों को ममता और अपनी अपनी अहन्ता के कारण बहुत से मतवादी पुरुष इस पारिजात पादपपंक्ति को परिरक्षण-रहित समझने लगे। इस नन्दनवन को महामाली के बिना उजड़ा हुआ मानने लगे। नगर नगर और ग्राम ग्राम में आर्यों का विरोध होने लगा। विचक्षण विज्ञानियों ने, स्वामीजी के स्वर्गारोहण पर, आर्य-समाज के जीवन-दिन अपनी उङ्गलियों पर गिन लिये। उन्होंने अनुमान कर लिया कि इस नौका का न्याय और नीतिनिपुण नाविक इसे भंवर से तो निकाल गया है परन्तु मंझधार से बाहर नहीं कर सका। अब उस कुशल कर्णधार के बिना यह निपट अनाड़ियों के हाथ पड़कर आप ही आप डूब जायेगी।

आर्यसमाजियों के हृदय, कई दिनों और मासों तक डगमगाते रहे। उनके मनों में निराशा का राज्य बना रहा। उनके चित्तों का उत्साह भग्न हो गया उनके साहस को, कहीं ठौर ठिकाना न रहा। वे अपने को जहाँ तहाँ निरसहाय और निरवलम्ब पाते थे। परन्तु थोड़े ही मासों के अनन्तर आर्यों की आशा लता में तप्त ताम्र वर्ण, सुकोमल कोंपल निकल आई उनकी सेवक सेना के सुचतुर संचालक सेनापति का काम करने लग गये। वे जगद्-गुरु की जगाई जोत को जी-जीवन से बचाये रखने में प्रयत्नशील हो गये।

जैसे भूमण्डल भर को भयभीत करने वासे, भारी भूकम्प से समुद्र कुछ पीछे हटकर फिर चौगुने बल से आगे बढ़ता है, उसी प्रकार भारी निराशा के अनन्तर आर्यसमाजियों का उत्साह सागर और प्रबलता से उछल उछलकर ऊंचे किनारों पर से भी पार होने लगा। नगर और ग्राम ग्राम में धर्म ध्वनि की गूंज सुनाई देने लगी। उनकी धर्म-प्रचार की तत्परता ने, सुधार की अनोखी लगन ने, धर्मचर्चा के विचित्र चातुर्य्य ने, शास्त्रार्थों के निर्भय भाव ने देखने वालों की आँखों में चकाचौंध लगा दी। आर्यों का 'नमस्ते' का मधुर नाद उस समय मनोमोहन महामन्त्र था। इसको सुनते ही आर्यजन की छाती प्रेम से उछलने लगती। वह आगन्तुक के मुख से यह मन्त्र सुनकर उसे गले लगा लेता। उसे, उसके नाम धाम की पूछताछ की भी आवश्यकता न रहती ! इस महामन्त्र के पुण्य पाठ ही से परम विश्वास का प्रकाश हो जाता। भेद-भावना मिटाकर, भ्रातृ-भाव के सूत्र में मनोंके मनके पिरोने के लिए इस महामन्त्र का मुख से उच्चारण करना ही पर्याप्त समझा जाता।

उस समय मिलाप में एक अनुपम माधुर्य आ गया था। संहित और संघ का बड़ा महत्व माना जाता था, लोगों में नया पुरुषार्थ, नूतन प्रेम, नवीन जीवन नव उद्योग और लगन उत्पन्न हो गई। जैसे आकाश में धमा चौकड़ी मचानेवाला मेघमण्डल वर्षा में हिमाचल पर बरसकर, कार्तिक मास में सर्वथा शान्त हो जाता है और नील नभ में उसकी एक टुकड़ी भी दिखाई नहीं देती। परन्तु वही मेघमाला समूह उस गिरिराज के अनेक अङ्गों में से नदियों के रूप में, नालों के आकार में छोटी कूलों की आकृति में, झरझर झरते झरनों की काया में, टप-टप टपकते बिन्दुओं के वेश में, स्त्रोतों के स्वरूप में अवतार-धारण करके अनेक मार्गों से बहकर, भारत के नाना भू-भागों को हरा भरा करने लगता है, वनों के दावानल तक को शान्त कर देता है। उसी प्रकार, महर्षि धर्म-मेघ बन कर बरसों निरन्तर वर्षा करते रहे और अन्त को कार्तिक मास ही में शान्त हो गये, परन्तु उनके भावों के जीवनांश, आर्य वीरों का अवतार-धारण कर देश-देशान्तरों में विविध प्रकार से धर्म-प्रसाद बाँटने लगे।

उस समय छोटा बड़ा, जिसे भी देखो, दयानन्द के जीवनाँश से सजीव हो रहा था। उसके भाल पर वैसी ही निर्भयता थी, वचनों में वैसा हो ओज था। उसकी आँखों में दयानन्दी तेज चमकता था। उसके मन में दयानन्दी उमङ्ग के ऊंचे तरङ्ग उठते थे। उसके हृदय में दयानन्दी उच्चाभिलाशा का विकास झलकता और उसके कर्मों में उस कर्म योगी की क्रिया का कौशल प्रकाशित होता था। उन दिनों जहाँ जाओ वहाँ आर्य बन्धुओं में देश-हित के गीत गाये जाते एकता देवी के पाठ सुनाई देते, सामाजिक संशोधन के सूत्र सङ्गठित होते और परमात्मदेव का यश-वर्णन किया जाता। उस समय आर्यों के मनों में आर्यों के घमममरों में, आर्यों की मण्डलियों में, आर्यों के मन्दिरों में आर्यों के महोत्सवों में जहां देखो, सर्वत्र वेद-प्रचार था, ईश्वर-विचार था, शिक्षा-विस्तार था, सामाजिक सुधार था, और आनन्द कन्द भगवान् दयानन्द के पावन प्रकाश का जय जयकार था।

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	ललित मोहन पाठक	ललित कुमार	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भण्डारी	विनोद भारद्वाज	मीनाक्षी शर्मा
प्रधान	सचिव	प्राचार्य

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १ ।।

हे सुखों के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

❖❖❖

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

❖❖❖

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	**सोहन सिंह**	**जे.के.दत्ता**	**एस.के. बारिया**
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

अस्मासु भद्र द्रविणानि धत्त।

(कल्याणकारी ऐश्वर्य धन हम सब को प्राप्त हो)

न त्वहं कामयेत राज्यम् न सुखम् न पुनर्भवम्।

कामयेत दुख तप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद कुमार	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	**उपप्रधान**	**सैक्रेटरी**	**प्रिंसीपल**

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. *अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।*
2. *नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।*
3. *अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।*
4. *आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।*

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	**ललित शर्मा**	**ललित मोहन पाठक**	**प्रवीण मल्होत्रा**
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर
अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

इन्द्रदेव गौतम	जिया लाल शर्मा	अचला भल्ला	सतीश कश्यप
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्
ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

विनोद कुमार भारद्वाज	एस.के.बरूटा	डा. सरोज भल्ला
प्रधान	सचिव	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

देवेन्द्र नाथ शर्मा	विजय सरीन	डा. रमेश चन्द्र तेजपाल
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

मुनीष मदान	**विनोद गांधी**	**विजयपाल**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. सत्र 2012-13 में बोर्ड परीक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

सुशील मोदगिल	जयप्रकाश	रवि महाजन	राजेश शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना।

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार आर्य	**एस.एम.शर्मा**	**सुनीता मलिक**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन +1, +2 के साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की स्तरीय शिक्षा का प्रबन्ध है। बी.ए.कक्षाओं में हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, इक्नामिक्स, राजनीतिक शास्त्र, इतिहास, पब्लिक, एडमिनिस्ट्रेशन, कम्प्यूटर एप्ली, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, ऑफिस मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग विषय पढ़ाये जा रहे हैं।

स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए.पंजाबी, एम.ए. इतिहास, एम.एस.सी.-आई.टी. एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्ली. एम.एस.सी. फैशन डिजाइनिंग एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ड्रैस डिजाइनिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कास्मेटॉलॉजी की कक्षाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं।

इनके साथ बी.सी.ए., बी.बी.ए. तथा बी.कॉम के शिक्षण का भी प्रबन्ध है।

विशेषताएं

1. वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
2. बहुद्दश्यीय विशाल सभागार
3. सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
4. वाई फाई प्रांगण।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
6. उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
7. जैनरेटरों एवं वाटर कूलरों (आर.ओ.)
8. एन.सी.सी.फैशन डिजाइनिंग का सुचारू प्रबन्ध।
9. गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

❖

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

❖

विशेषताएं

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवाये।

सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी	भारत भूषण मेनन	राजेश कुमार गांधी	उर्मिल सिंगला
प्रधान	मैनेजर	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह-क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट प्रधान	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट** उप प्रधान	**संजीव शोरी** मैनेजर
भारत मोदी सचिव	**प्रो. सुमन अग्रवाल** कार्यकारी प्रिंसीपल	**डा. एच.कुमार कौल** डायरैक्टर

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थ: हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन
प्रधान

भारत मोदी
उप प्रधान

पवन सिंगला
उपप्रधान

बसन्त शोरी
मैनेजर

संजीव शोरी
सैक्रेटरी

वन्दना गोयल
कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल
डायरैक्टर

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रुणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात् ॥१॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

कुलवन्त राय अग्रवाल	निहाल चंद एडवोकेट	सुषमा कुमारी
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेदः 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं

वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम तथा सैशन 2011-12 में दसवीं की दो छात्राओं तथा+2 की दो छात्राओं ने स्टेट मैरिट में स्थान प्राप्त किया।
13. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	अशोक कुमार अग्रवाल	विजय अग्रवाल	सोनिया सच्चर
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

पी.डी गोयल एडवोकेट — प्रधान

रमेश कुमार गर्ग — उप-प्रधान

गौरी शंकर — मन्त्री

अश्विनी कुमार मोंगा — उप प्रधान

विपिन कुमार गर्ग — प्रधानाचार्य

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुषः- सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

❖❖❖

पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक	अश्विनी मेहता	महेश चन्द्र भल्ला
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां, जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये, सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरिताद्‌वाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ
निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को
समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये
निरन्तरकार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

***

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और
आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा	**सुधीर शर्मा**	**मीनू कपूर**
प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	दर्शन कुमार	किरण जिन्दल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन. माडल सी.सै. स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा	योगेश गोयल	अश्विनी कुमार शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	संयुक्त सचिव
डी.एम.कालेज प्रबन्धक समिति	डी.एम.कालेज प्रबन्धक समिति	डी.एम.कालेज प्रबन्धक समिति
मोगा	मोगा	मोगा

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्वल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

अश्विनी कुमार शर्मा
ज्यायंट सैक्रेटरी

योगेश गोयल
उपप्रधान

प्रो.दिलीप सिंह
कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

thearyasamaj.org

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–0011/2012-14 आर्य मर्यादा साप्ताहिक आर. नम्बर 26281/74

आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द के अतुल्य बल का प्रमाण

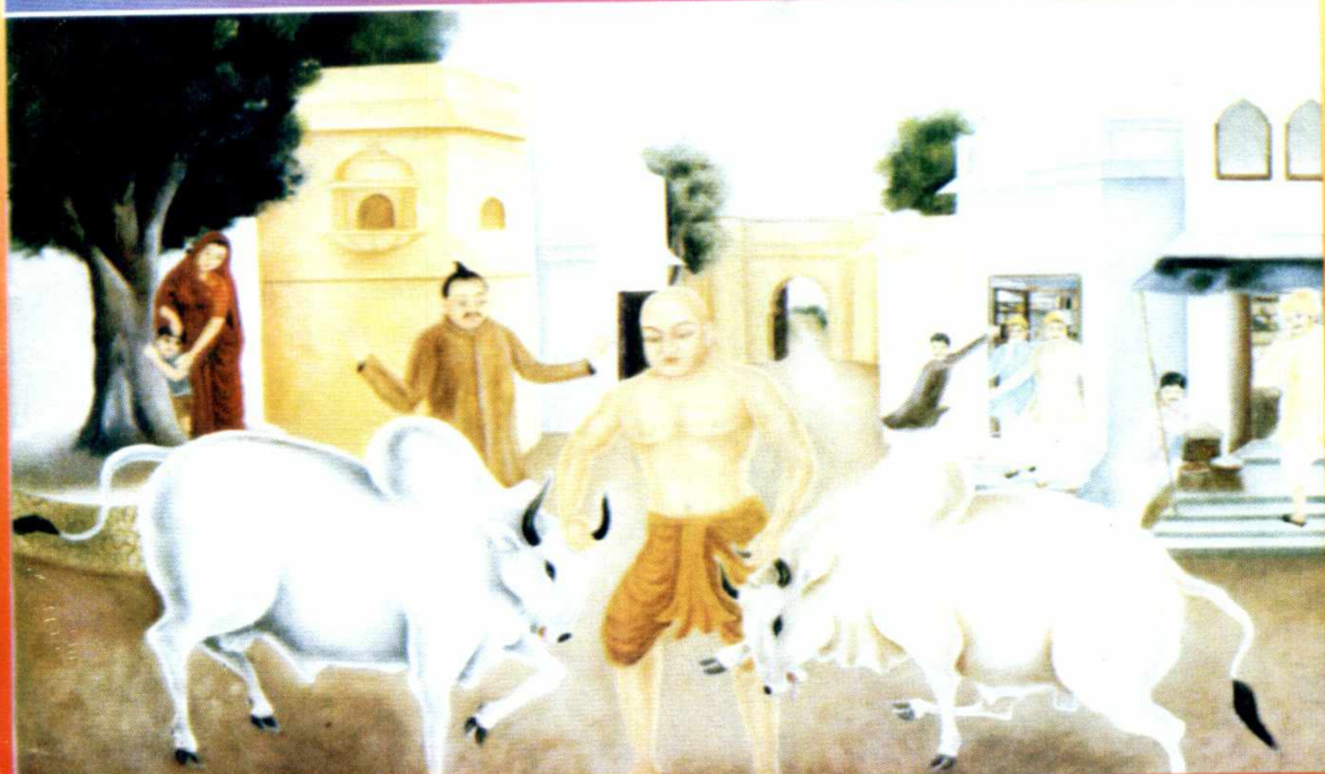

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।